

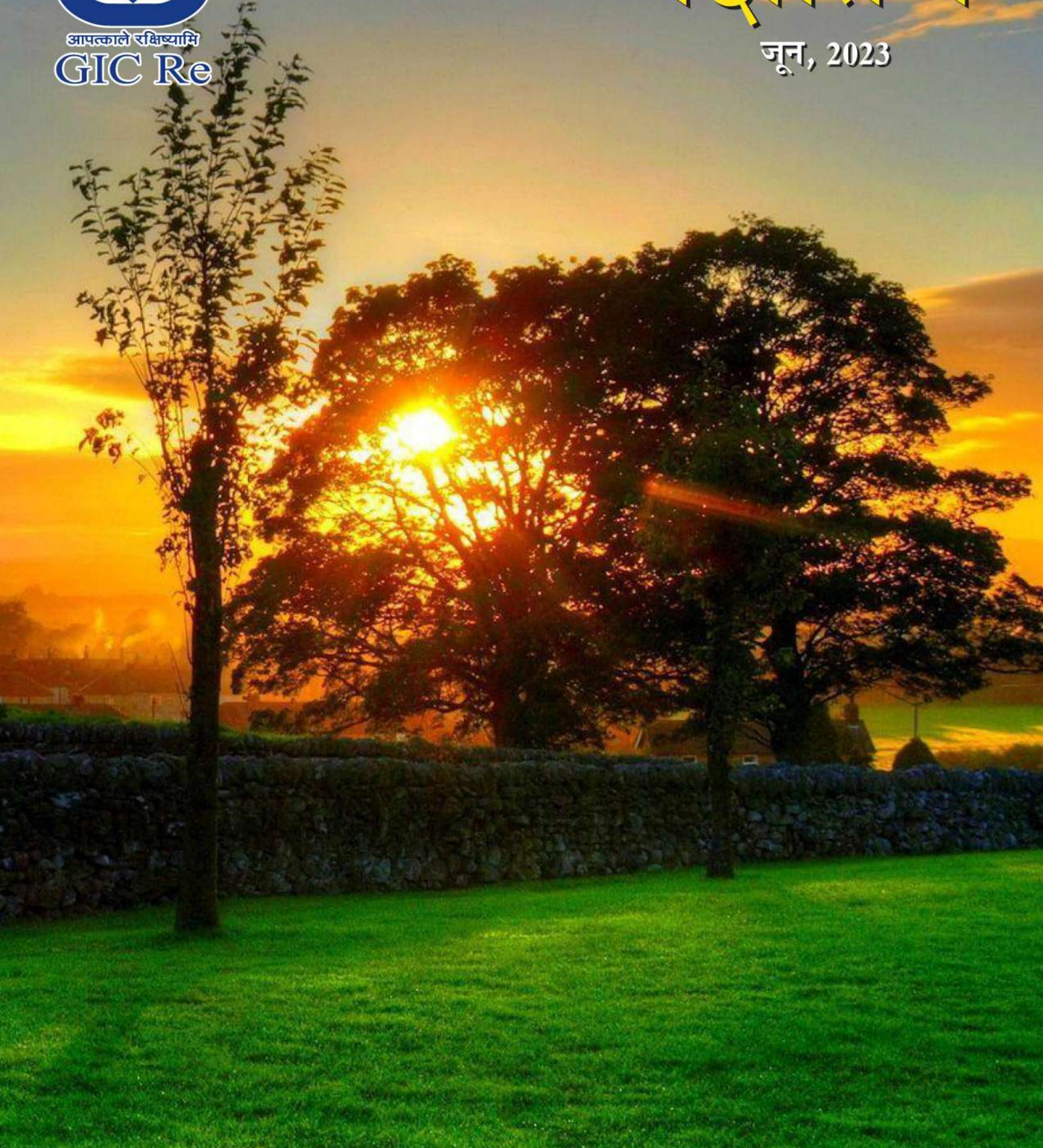


आपत्काले रक्षिष्यामि

GIC Re

क्षितिज

जून, 2023



भारतीय साधारण बीमा निगम, राजभाषा विभाग, सुरक्षा, चर्चगेट, मुंबई - 400 020.

नराकास पुरस्कार से गौरवान्वित गृह-पत्रिका 'क्षितिज'



अनुक्रमणिका

संरक्षक

श्रीमती जयश्री बालकृष्ण
jayashrib@gicre.in

संपादन

श्री राजेश खडतरे
rajeshk@gicre.in

श्रीमती प्रेरणा पुत्रन
preranap@gicre.in

सुश्री अपर्णा सिन्हा
avsinha@gicre.in

श्रीमती जयश्री डहाले
jdahale@gicre.in

सुश्री इन्दिरा
indira@gicre.in

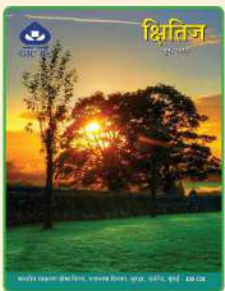
प्रकाशन समिति

श्री सचिन्द्र साळवी
श्री देशराज चढार
श्री मनीष तिवाड़ी

संपर्क

संपादक
क्षितिज
भारतीय साधारण बीमा निगम
राजभाषा विभाग,
सुरक्षा, 170, जे. टाटा मार्ग,
चर्चगेट, मुंबई - 400 020

मुखपृष्ठ



उतरने लगे श्याम मेघ
झुक आया आकाश
क्षितिज की सीमा पार
इंद्रधनुष का पहना हार

विषय

लेखन

पृष्ठ सं.

• अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से	देवेश श्रीवास्तव	4
• संपादकीय	अपर्णा सिन्हा	5
• पदोन्नत महाप्रबंधकों को हार्दिक बधाई	राजभाषा विभाग	6
• पदोन्नत उप महाप्रबंधकों को हार्दिक बधाई	राजभाषा विभाग	6
• निगम को वर्ष का पुनर्बीमाकर्ता पुरस्कार	सचिंद्र साळवी	8
• निगम में योग दिवस	विकास पंडित	9
• हिंदी गृह-पत्रिका 'क्षितिज' को पुरस्कार	इन्दिरा	10
• राजभाषा विभाग की मजबूत स्तंभ सेवानिवृत्त	राजभाषा विभाग	10
• लंदन की आधिकारिक यात्रा	वेदांत झकरवार	11
• निगम में प्रशिक्षण कार्यक्रम	मनाली मधुसूदन पोटे	12
• सामाजिक निष्ठा की दायित्व : सीएसआर गातावेधियाँ	स्नेहा नायर	14
• कार्मिक सामाचार	मानव संसाधन विभाग	16
• भारत के महान संत और ऋषि मुनि	मनीष तिवाड़ी	17
• दहेज - सामाजिक प्रगति में रोड़ा	इन्दिरा	20
• स्वस्थ तन के लिए स्वस्थ स्वस्थ मन जरूरी	डॉ. अनुराग पी. राऊळ	21
• पतरातू घाटी : एक सुंदर यात्रा	अजीत बारला	22
• केरल के जनजातीय नृत्य कला रूप	अंजना एस.	24
• पर्यावरण संरक्षण और अपशिष्ट प्रबंधन	नरेन्द्र बासा	26
• ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव	दिनेश चंद	28
• कविताएँ : इस वर्षा ऋतु को सादर नमन... दो साथी	मनीषा घोगले इन्दिरा	30
• हिंदी में काम करना आसान है....	राजभाषा विभाग	31
• मार्च, 2023 के वित्तीय परिणाम की समीक्षा	निगमीय संचार विभाग	32

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से संपादन मंडल या कंपनी का सहमत होना जरूरी नहीं है.

यह अंक निगम की वेबसाइट www.gicre.in पर उपलब्ध है. आप अपनी प्रतिक्रियाएं kshiti@micre.in पर भी भेज सकते हैं.

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...



साथियों,

हमारे निगम की गृह-पत्रिका 'क्षितिज' का कई वर्षों से सतत प्रकाशन हो रहा है. यह गौरव की बात है कि हमारी पत्रिका को गत कई वर्षों से टॉलिक राजभाषा पुरस्कार भी प्राप्त होता रहा है. यह पत्रिका निगम में हिंदी प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ हमारे लिए एक साझा मंच भी प्रदान करती है जिसके माध्यम से निगम में होने वाली गतिविधियों तथा कार्यकलापों की जानकारी प्राप्त होती है. इसके अलावा बीमा व्यवसाय तथा समसामयिक मुद्दों से संबंधित हिंदी लेख निगम के कार्मिकों की हिंदी के प्रति रुचि को भी दर्शाते हैं. इस तरह यह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देते हुए हमारे निगम का महत्वपूर्ण संपर्क सूत्र है.

पिछले वित्त वर्ष के परिणाम हमारे निगम की लगातार वृद्धिशील सॉल्वेंसी अनुपात को दिखाते हैं जो 'बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण' (आईआरडीएआई) के दिशा-निर्देशों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का भी सूचक है. हाल ही में 'दि असोसिएटेड चेम्बर ऑफ कॉमर्स एन्ड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया' (ASSOCHAM), ने जीआइसी री को 'वर्ष का पुनर्बीमाकर्ता' पुरस्कार से सम्मानित किया है. यह पुरस्कार पुनर्बीमा व्यवसाय में जीआइसी री के महत्व को प्रदर्शित करता है.

देश की आर्थिक संवृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए बीमा रूपी रक्षा कवच बेहद महत्वपूर्ण होता है. वर्तमान में भारत विश्व का 10वां सबसे बड़ा बीमा बाजार है, लेकिन देश की जनसंख्या और आर्थिक क्षमता के अनुसार इसका आकार और बड़ा होना चाहिए. इसके लिए आवश्यक है कि भारतीय बाजार में बीमा व्यापकता (Insurance penetration) को विस्तृत फलक मिले. इसी की तर्ज पर आईआरडीएआई बीमा उत्पादों को किफ़ायती बनाने के लिए 'बीमा सुगम' को लाने की तैयारी में है जो एक ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म की तरह बीमा कंपनी तथा ग्राहकों के बीच की दूरी को कम करेगा. 'बीमा सुगम' एक क्रांतिकारी डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म होगा जो महत्वपूर्ण बदलाव लाने की क्षमता रखता है. यह विभिन्न बीमा हितधारकों को एक मंच प्रदान करेगा और ग्राहकों की बीमा जरूरतों को भी पूरा करेगा.

वैश्विक स्तर पर लगातार बदलाव हो रहे हैं और इनका प्रभाव व्यवसाय पर पड़ना लाज़िमी है. वर्तमान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का बढ़ता प्रयोग हर तरीके के व्यवसाय को प्रभावित कर रहा है. हमें अपने व्यवसाय को व्यापकता देने के लिए हर बदलाव के प्रति सतर्क रहना होगा और इन बदलावों के साथ-साथ अनुकूल परिवर्तन के लिए तैयार रहना होगा. इस तरह का लचीलापन व्यवसाय को उन्नत करता है. हमारी वर्तमान व्यवस्था, अनुभवी अधिकारियों के साथ नव युव-शक्ति और उत्तम सूचना तकनीकी प्रणाली आदि हर चुनौती का सामना करने के लिए हमें सक्षम बनाते हैं.

इसी के साथ मेरा दृढ़ विश्वास है कि जीआइसी री राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय बीमा उद्योग में निरंतर आगे बढ़ते हुए नई ऊँचाईयाँ हासिल करता रहेगा. मैं सभी हितधारकों, बोर्ड सदस्यों, ग्राहकों, मध्यस्थों और सहकर्मियों के सहयोग और समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूँ और नई उपलब्धियाँ हासिल करने की शुभकामनाएँ देता हूँ.

● देवेश श्रीवास्तव

संपादकीय

गर्मी से राहत पाने के लिए सभी को बरसात के आने का इंतजार रहता है. धूप से तपती वसुंधरा से सभी जीव विचलित होने लगते हैं. पीने के पानी की समस्या उत्पन्न होने लगती है. बिजली चली जाती है. गर्मी से निजात पाने के उपाए किए जाने लगते हैं. ऐसे में जब बरसात दस्तक देती है तो दिल बाग - बाग हो जाता है. मन मयूर नाच उठते हैं. टप-टप पड़ती वर्षा की बूंदे मन में उत्साह भर देती है. गर्मी की उमस और थकान से भरे जीवन में ताजगी का एहसास दिलाती वर्षा मानों दिलों में फूल खिला देती हैं. सभी पेड़-पौधे खुशी से झूमने लगते हैं. वसुंधरा सतरंगी रंगों में रंगने लगती है.



लेकिन अब ग्लोबल वार्मिंग से जलवायु परिवर्तन के कारण बरसात के जिस रूप का दर्शन होने लगा है वह मन में भय उत्पन्न करने लगा है. बरसात के आगमन के साथ-साथ एक सिहरन भी मन में उठने लगती है कि पता नहीं कहाँ अब बादल फटनेवाला है और पता नहीं कब अपना विकराल रूप दिखा कर सब कुछ तहस-नहस करने पर आमादा हो जाएगा. इधर कुछ सालों से हम देख रहे हैं कि हर वर्ष कभी असमय वर्षा और कभी वर्षाऋतु में सभी जगह बाढ़ के कारण विकराल स्थिति पैदा हो जाती है. प्रकृति के विकराल रूप देखकर लगता है कि मानव द्वारा किए जा रहे अविरत दोहन से वह त्रस्त हो चुकी है और वह चाह कर भी अपने आप को रोक नहीं पा रही है और जैसे ही उसे मौका मिलता है, अपना गुस्सा जाहिर कर देती है.

मानव आज धरती से लेकर आसमान तक अपना परचम लहरा रहा है. रोज - रोज विकास के नए पथ पर आगे बढ़ रहा है और जाहिर है कि उसकी इस सफलता में प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग इतना अंधाधुंध हुआ है कि प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रकृति ने जो नियम बना रखा था, उसपर अमल कर पाना उसके लिए ही मुश्किल होता चला जा रहा है.

विकास के कार्य को तो रोका नहीं जा सकता लेकिन विकास के कारण वातावरण में जो प्रदूषण हो रहा है उसे कम करने के लिए जी-20 और विश्व आर्थिक मंच का फर्स्ट मूवर्स कोलैगेशन जैसी बैठकों में चर्चा की जाती है. विश्वभर के विकसित और विकासशील देश मिल कर हरित जलवायु पर अपने विचार रखते हैं कि कौन से ऐसे कदम उठाए जाएं कि जिससे जलवायु में होनेवाले परिवर्तन को रोका जाए, और मानव द्वारा किए जा रहे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और भारी उद्योगों से निकलने वाली विषैली गैसों को कम किया जा सके.

विश्वास है कि स्वच्छ प्रौद्योगिकी नवाचार को अपनाते हुए विश्वभर में मानव निर्मित समस्या के कारण होनेवाले जलवायु प्रदूषण को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकेगा और हरित जलवायु के असर से हमारी शस्य स्यामला वसुंधरा सभी के लिए वरदान साबित होगी.

● अपर्णा सिन्हा

पदोन्नत महाप्रबंधकों को हार्दिक बधाई . . .

श्री एस.के. रथ



श्री सरोज कुमार रथ भारतीय बीमा संस्थान से फेलो तथा मरिन में एसोसिएट हैं। वे अप्रैल 1991 में यूनाइटेड इंडिया में सीधी भर्ती अधिकारी के रूप में शामिल हुए। अंडरराइटिंग और क्लेम दोनों में 9 वर्षों तक प्रत्यक्ष बीमाकर्ता के रूप सेवा के बाद, वर्ष 1999 में जीआईसी री में स्थानांतरित हुए। तब से, वे पिछले दो दशकों में जीआईसी री के भीतर विभिन्न कार्यों में शामिल रहे हैं।

पुनर्बीमा समारोह के साथ अपने जुड़ाव द्वारा उन्होंने दुनिया भर के अधिकांश क्षेत्रों जैसे समुद्री, कृषि, स्वास्थ्य, विविध, मोटर, देयता, विमानन, क्रेडिट और जीवन पुनर्बीमा आदि विशिष्ट क्षेत्रों के साथ काम किया है। भारतीय बीमा बाजार में व्यापार पोर्टफोलियो को संभालते हुए, उन्होंने तेजी से बदलते गैर-टैरिफ परिदृश्य में कई चुनौतियों को संभाला है, और समुद्री, कृषि और स्वास्थ्य के पोर्टफोलियो के प्रदर्शन में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सेडेंट्स को उनके पोर्टफोलियो की सुरक्षा के लिए अद्यतन समाधान प्रदान करने के साथ-साथ पूंजी राहत भी प्रदान किया है।

महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति पर, उन्हें जीआईसी के मुंबई स्थित प्रधान कार्यालय में सीडीओ, बिजनेस इंटेलिजेंस, एक्चुअरी और इन्वेस्टमेंट अकाउंट्स के कार्य सौंपे गए हैं।

श्रीमती जयश्री बी.



वह मुंबई विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातकोत्तर, भारतीय बीमा संस्थान की फेलो और चार्टर्ड इंश्योरेंस इंस्टीट्यूट (सीआईआई), लंदन की एसोसिएटशिप हैं। जीआईसी में अपने करियर के अधिकांश समय में उन्होंने निवेश में काम किया है और वर्तमान में उन्हें 'उद्यम जोखिम प्रबंधन',

लेखा परीक्षा और अनुपालन, बजट, सीएसआर, कानूनी, क्रेडिट रेटिंग और निवेश मिड एंड बैक' आदि पोर्टफोलियो का प्रभार दिया गया है।

श्री वी. बालकृष्ण



भारतीय लागत लेखाकार संस्थान से योग्यता प्रमाण पत्र और एफआईआईआई और एसीआईआई, लंदन की योग्यता के साथ एक लागत और प्रबंधन लेखाकार, वर्तमान में भारतीय साधारण बीमा निगम में क्लेम वर्टिकल का प्रबंधन करते हैं। निगम के साथ अपनी 34 साल की सेवा के दौरान, उन्होंने पुनर्बीमा और वित्त के कई वर्गों में काम किया है।

पदोन्नत उप महाप्रबंधकों को हार्दिक बधाई...

सुश्री मनाली पतके



सुश्री मनाली पतके वाणिज्य में स्नातकोत्तर और भारतीय बीमा संस्थान से फेलो हैं।

वह 1988 में जीआईसी री में शामिल हुईं और 2001 तक मानव संसाधन विभाग में विभिन्न

सेवा लाभ पोर्टफोलियो को संभाला। 2001 से 2015 तक पुनर्बीमा अंडरराइटिंग विभाग में कार्यकाल के दौरान, वह भारतीय और विदेशी संपत्ति व्यवसाय के अंडरराइटिंग में सक्रिय रूप से शामिल थीं। सहायक महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति पर, वह क्लेम्स वर्टिकल की प्रभारी थीं, और जीआईसी प्रधान कार्यालयमें सभी गैर-जीवन व्यवसाय दावों का कार्य संभाला।

वर्तमान में उप महाप्रबंधक के रूप में, वह लाइफ री पोर्टफोलियो (घरेलू और विदेशी) मूल्य निर्धारण और दावों का कार्य संभालती हैं।

श्री विजय साळवे



श्री विजय साळवे 1988 में जीआईसी री में शामिल हुए। अपनी 35 वर्षों की सेवा के दौरान, उन्होंने संगठन के भीतर विभिन्न विभागों जैसे कार्यालय सेवा विभाग, वित्तीय सलाहकार विभाग, पुनर्बीमा विभाग, मोटर पूल विभाग, व्यापार लेखा अनुभाग, अंतरराष्ट्रीय संचालन विभाग में विभिन्न पदों पर काम किया है।

वर्तमान में उप महाप्रबंधक के रूप में उनके पास व्यवसाय लेखा अनुभाग (विदेशी) का पोर्टफोलियो है।

श्री सतीश एस.

श्री सतीश कुमार अप्रैल 1999 में जीआईसी री में सीधी भर्ती द्वारा अधिकारी के रूप में शामिल हुए थे। वह इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया और इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया के एसोसिएट सदस्य होने के साथ-साथ भारतीय बीमा संस्थान से फेलो भी हैं। वह जीआईसी री के भीतर निवेश, क्रेडिट पुनर्बीमा, समुद्री पुनर्बीमा आदि सहित विभिन्न कार्यों में शामिल थे। उन्हें चार साल के लिए जीआईसी री की लंदन शाखा में तैनात किया गया था, जहां उन्होंने पुनर्बीमा दावों और वित्त कार्यों को संभाला। वह वर्तमान में उप महाप्रबंधक, कंपनी सचिव और अनुपालन अधिकारी के पद पर हैं।

सुश्री राधिका रविशेखर



श्रीमती राधिका रविशेखर बैचलर ऑफ कॉमर्स तथा भारतीय बीमा संस्थान से फेलो हैं। 1988 में निवेश विभाग में स्टेनो के रूप में जीआईसी में शामिल हुईं और कंपनी के साथ-साथ इनका करियर भी विकसित हुआ। 20 से अधिक वर्षों तक निवेश विभाग में अधिकारी के रूप में

काम करने के बाद विभिन्न निवेश रणनीतियों की गहरी समझ विकसित की है और निवेश को प्रभावी ढंग से संभालने में मूल्यवान अनुभव प्राप्त किया है।

निवेश में कार्यकाल के दौरान, उन्होंने अन्य विभागों में भी अपनी विशेषज्ञता का योगदान दिया है - व्यवसाय लेखा और पुनर्बीमा (संपत्ति)।

सहायक महाप्रबंधक और सीआईओ के रूप में इन्होंने निगम के पूरे निवेश पोर्टफोलियो का प्रबंधन किया है जिसमें ऋण, इक्विटी, मुद्रा बाजार और वैकल्पिक निवेश फंड (एआईएफ) शामिल हैं। बाजार की गतिशीलता की व्यापक समझ के साथ, वह सुनिश्चित करती है कि जीआईसी री के निवेश निर्णय अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के साथ संरेखित हों। हाल ही में इन्हें निवेश परिचालन में उप महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नत किया गया।

सुश्री बबीता अमीन



सुश्री बबीता अमीन मुंबई विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातकोत्तर और भारतीय बीमा संस्थान से फेलो हैं।

वह 1988 में जीआईसी री में शामिल हुईं और वर्षों से वित्त

और पुनर्बीमा विभागों को संभाल रही हैं- ट्रीटी एवं फैकल्टेटिव, दोनों अंडरराइटिंग - घरेलू और विदेशी पुनर्बीमा व्यवसाय, संपत्ति, आरआईडब्ल्यूडब्ल्यू, समुद्री, कृषि (रेट्रोसेशन सहित), रिटैकाफुल, स्वास्थ्य, क्रेडिट, देयता और विविध वर्ग।

वर्तमान में, उप महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति पर, वह जीआईसी री प्रधान कार्यालय में संपत्ति घरेलू व्यवसाय, इंजीनियरिंग और बृहद् जोखिम और रिट्रोसेशन की प्रभारी हैं।

● राजभाषा विभाग

निगम को 'वर्ष का पुनर्बीमाकर्ता' पुरस्कार



'दि असोसिएटेड चेम्बर ऑफ कॉमर्स एन्ड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया' (ASSOCHAM), ने भारतीय साधारण बीमा निगम को "वर्ष का पुनर्बीमाकर्ता" पुरस्कार से सम्मानित किया है. यह पुरस्कार भारतीय साधारण बीमा निगम के पुनर्बीमा क्षेत्र में उत्कृष्ट संचालन और संगठन द्वारा बीमा क्षेत्र में किए जा रहे महत्वपूर्ण योगदान को चिह्नित करता है.

यह समारोह 24 मई 2023 को होटल हिंदुस्तान इंटरनेशनल, कोलकाता में आयोजित किया गया था.

'दि असोसिएटेड चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया', एक गैर-सरकारी व्यापार संघ और वकालत समूह है. यह भारत में व्यापार और वाणिज्य के हितों का प्रतिनिधित्व करता है और मुद्दों और पहलों में बीच एक इंटरफेस के रूप में कार्य करता है. इस संगठन का लक्ष्य घरेलू और अंतरराष्ट्रीय व्यापार दोनों को बढ़ावा देना है और भारत के व्यापार और उद्योग के विकास के लिये अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देते हुए व्यापार बाधाओं को कम करना है.

यह समारोह 'इंश्योरेन्स लीडर्स मीट - 2023' के नाम से आयोजित किया गया था, जिसमें बीमा उद्योग के काफी वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए थे. इस समारोह में श्री इंदरजीत सिंह, महासचिव, साधारण बीमा परिषद, श्रीमती गिरीजा सुब्रमणियन, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, भारतीय कृषि बीमा कंपनी, श्री कस्तुरी सेनगुप्ता, महा प्रबंधक, नॅशनल इंश्योरेन्स, श्री टी. बाबू पॉल, महा प्रबंधक, नॅशनल इंश्योरेन्स, श्री के. बी. विजय श्रीनिवास, पूर्व संयुक्त कार्यकारी अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, युनाइटेड इंडिया इंश्योरेन्स कंपनी इत्यादि शामिल थे. भारतीय साधारण बीमा निगम की तरफ से श्री सचिंद्र साळवी, उप महा प्रबंधक शामिल थे.

इस समारोह में पुरस्कार वितरण के साथ-साथ निम्नवत विषयों पर चर्चा हुई:

1. साइबर सुरक्षा खतरे, (विशेष रूप से वित्तीय क्षेत्र के संगठनों में)
2. कृत्रिम मेधा समाधान और इंश्योरटेक
3. साइबर बीमा - उद्योगवार उत्पाद और पेनिट्रेशन
4. भारतीय बीमा क्षेत्र और भविष्य के रुझान
5. जीवन और गैर-जीवन बीमा में संचालन के संदर्भ में उत्पाद नवाचार
6. केंद्रीय बजट के बाद बीमा क्षेत्र में हुए बदलाव और हाल के नियामक सुधार

श्री इंदरजीत सिंह ने 'बीमा सुगम', 'बीमा वाहक' के बारे में जानकारी दी. उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र में अनंतिम रूप से उपलब्ध बीमा सुगम विशेषताएँ बताते हुए कहा कि:

- बीमा सुगम सभी बीमा हितधारकों को जोड़ेगा और सशक्त करेगा.
- बीमा सुगम एक क्रांतिकारी डिजिटल प्लेटफॉर्म (एक अमेज़ॅन जैसा वन स्टॉप डिजिटल प्लेटफॉर्म) होगा जो कई हितधारकों के लिए प्रक्रियाओं को स्वचालित और डिजिटलाइज़ करने के लिए उन्नत तकनीकों का नवाचार, विकास और एकीकरण करता है. हितधारकों में बीमा कंपनियाँ, पॉलिसी धारक, मध्यस्थ, बीमा रिपॉजिटरी और बाहरी डेटा स्रोत आदि शामिल हैं.
- जीवन, स्वास्थ्य और सामान्य बीमा (मोटर, यात्रा, आदि सहित) सहित सभी बीमा आवश्यकताओं को बीमा सुगम द्वारा पूरा किया जाएगा.
- नियामक, लाइफ इंश्योरेंस काउंसिल और जनरल इंश्योरेंस काउंसिल द्वारा समर्थित ऑनलाइन प्लेटफॉर्म व्यक्तियों को पॉलिसी खरीदने से लेकर क्लेम सेटलमेंट तक और भी बहुत कुछ उनकी सभी बीमा जरूरतों को पूरा करने की अनुमति देगा.

बीमा सुगम के 1 अगस्त, 2023 से शुरू होने की संभावना है.

बीमा वाहक - भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण की एक और पहल है जो अंतिम मील तक पहुंचने में मदद करेगी. प्रत्येक ग्राम पंचायत में एक 'बीमा वाहक' होगा जिसे बेचने और बेचने का काम सौंपा जाएगा. बीमा वाहक एक महिला-केंद्रित बीमा वितरण चैनल बनाने का लक्ष्य रखता है. इस पहल से विश्वास को बढ़ावा मिलने और बीमा के बारे में जागरूकता पैदा होने की संभावना होगी. देश में इंश्योरेंस सेक्टर के विस्तार के लिए भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण (IRDA) ने जल्द ही बीमा वाहक को जोड़ने का प्रस्ताव रखा है. यह बीमा वाहक हर गांव में तैनात किए जाएंगे ताकि बीमा से जुड़े उत्पादों को लोगों तक आसानी से पहुंचाया

जा सके. साथ ही इससे जुड़ी सभी सेवाएं वहां तक मुहैया कराई जा सकें. हर ग्राम पंचायत में बीमा वाहकों को रखा जाएगा. इसे जल्द ही शुरू करने की योजना है. बीमा वाहक का काम बीमा से जुड़ी सभी सेवाओं के साथ बीमा से जुड़े सभी उत्पादों को लोगों को देना भी होगा.

बीमा विस्तार नामक एक सामाजिक सुरक्षा जाल उत्पाद, जो उन स्थानों को लक्षित करता है जो बीमा सेवा से वंचित हैं. बीमा विस्तार में स्वास्थ्य, संपत्ति, जीवन और दुर्घटना बीमा

आदि सभी शामिल होंगे.

भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण के चेयरमैन श्री देबाशीष पांडा जी ने '2047 तक सभी के लिए बीमा' - ('Insurance for All by 2047') की घोषणा की है. सभी बीमा कंपनियों को इस लक्ष्य को पूरा करने की दिशा में प्रयास करने के लिए कहा गया. इस समारोह में लगभग 100 अधिकारी शामिल हुए थे.

● सचिंद्र साळवी, उप महाप्रबंधक

निगम में योग दिवस



हर वर्ष अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है. हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्व भर में योग दिवस मनाया गया. इस वर्ष 9वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस था जिसकी थीम थी- 'वसुधैव कुटुंबकम् के लिए योग'. भारतीय साधारण बीमा निगम ने भी अपने

कार्यालय में योग दिवस का आयोजन किया गया.



किसी भी कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से होती है. इस योग दिवस कार्यक्रम में श्री उप महाप्रबंधक, एन.बी. सोनावणे और सहायक महाप्रबंधक, श्रीमती मेघा सावंत ने दीप प्रज्वलित किया. निगम में योग दिवस से संबंधित गतिविधियों का आयोजन श्री विकास पंडित, श्री प्रवीण धूरी और सुश्री अपर्णा सिन्हा द्वारा किया गया. इनके मार्ग-निर्देश में योग का महत्व और उसका स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभावों से सभी को परिचित कराया गया. इस अवसर पर दीप प्रज्वलन के पश्चात जलनेत्री,

नेत्र-स्नान, ग्रीवा चालन, स्कंध चालन, ताड़ासन, वृक्षासन, अर्द्धचक्रासन, वज्रासन उष्ट्रासन से परिचय कराया गया. इसके अलावा कपालभाति, अनुलोम-विलोम और भ्रामरी से भी परिचित कराया गया. इसी के साथ सभी प्रतिभागियों द्वारा साथ-साथ आसन भी करवाए गए.

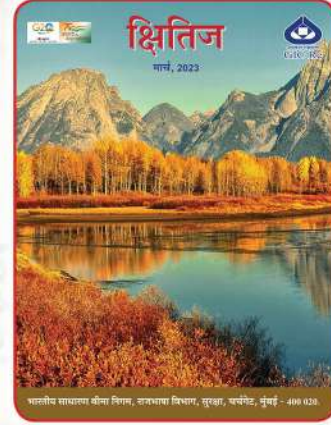
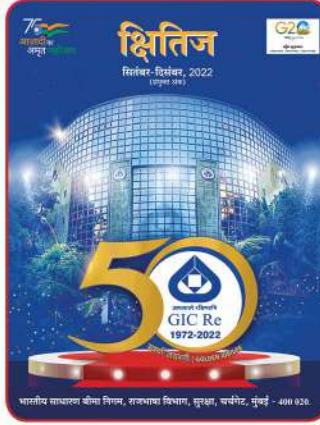
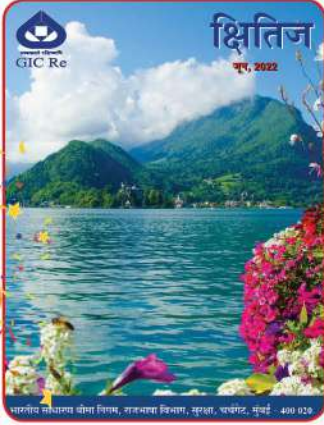


आयुष मंत्रालय द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों का पालन करते हुए योग के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया. इस योग कार्यक्रम में करीब 35 महिलाओं और 25 पुरुष कर्मिकों ने लेकर इसे सफल बनाया. कर्मिकों ने इसे सराहा और इच्छा प्रकट की कि इस प्रकार के योग प्रशिक्षण नियमित रूप से किया जाए तो वह सभी के लिए लाभप्रद होगा.



● विकास पंडित, वरिष्ठ प्रबंधक

हिंदी गृह-पत्रिका 'क्षितिज' को पुरस्कार



निगम के लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मुंबई स्थित 64 पब्लिक सेक्टर कार्यालयों के लिए 'राजभाषा विभाग क्लब' के रूप में स्थापित 'मुंबई (उपक्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' (नराकास) की ओर से आयोजित बैठक तथा पुरस्कार वितरण समारोह में निगम की गृह-पत्रिका 'क्षितिज' को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

यह पुरस्कार वर्ष 2022-23 के दौरान प्रकाशित क्षितिज के 4 तिमाही अंकों के लिए प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि हमारी इस गृहपत्रिका को विगत कई वर्षों से निरंतर पुरस्कार प्राप्त हो रहा है जो हमारे निगम के राजभाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

इस वर्ष यह समारोह दिनांक 25 जुलाई, 2023 को दोपहर 3.00 बजे होटल प्रेसिडेंट, कफपरेड, मुंबई में नगर राजभाषा

कार्यान्वयन समिति की 71वीं बैठक के दौरान प्रदान किया गया जिसका संयोजन हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, मुंबई द्वारा किया जाता है। इस बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में इस उपलब्धि के लिए शील्ड तथा प्रमाण-पत्र दिया गया जिसे हमारे अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा स्वीकार किया गया था। इस दौरान राजभाषा विभाग के सभी सदस्य भी उपस्थित थे।

'क्षितिज' पत्रिका को इस स्तर पर पहुंचाने के लिए जीआइसी के मार्गदर्शक कार्यपालकों, संपादन समिति के सदस्यों, लेखकों एवं राजभाषा कार्यावयन को उत्कृष्ट बनाने के लिए निगम में कार्यरत सभी सदस्यों को धन्यवाद तथा हार्दिक बधाई।

● **इन्दिरा, सहायक प्रबंधक** (चित्र कवर पेज 2 पर)

राजभाषा विभाग की मज़बूत स्तंभ सेवानिवृत्त

श्रीमती जयश्री डहाळे, उप प्रबंधक, राजभाषा विभाग में गौरवशाली सेवा प्रदान कर 31 जुलाई, 2023 को सेवानिवृत्त हो रही हैं। वे हिंदी से स्नाकोत्तर हैं। इन्होंने वर्ष 1988 में 'दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड' में हिंदी अनुवादक के तौर पर प्रवेश किया तथा वर्ष 2011 में जीआइसी री में हिंदी अधिकारी के तौर पर आईं। उन्होंने अपने जीवन के 35 वर्ष राजभाषा हिंदी की सेवा में बिताए हैं।

अपने कार्यकाल के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। नराकास स्तर पर कई पुरस्कार

प्राप्त करने वाली हमारी गृह-पत्रिका 'क्षितिज' से लंबे समय तक जुड़ी रही है, जिसमें इनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। पिछले 10 वर्षों से जीआइसी री में आयोजित होने वाले हिंदी दिवस कार्यक्रमों में उनकी महती भूमिका रही है। अपनी वाक्पटुता की कला से मंच संचालन के कार्य को बेहद खूबसूरती से संभालना इनकी खास पहचान है। हिंदी कार्यशालाओं में उत्कृष्ट फैकल्टी के रूप में इन्होंने व्याख्यान दिए हैं। इन्होंने अनुवाद प्रशिक्षण में उत्कृष्टता मैडल भी प्राप्त किया है। अपने 35 वर्षों के लंबे कार्यकाल में हस्त आधारित कार्यप्रणाली से लेकर कंप्यूटर आधारित हिंदी में कार्य करने वाली श्रीमती जयश्री डहाळे को सेवानिवृत्ति पर हार्दिक शुभकामनाएँ...

● **राजभाषा विभाग**

लंदन की आधिकारिक यात्रा



विलिस विमानन बीमा सेमिनार, जो हर साल जून महीने में लंदन के विलिस कार्यालय में आयोजित किया जाता है, इस साल भी 5 जून से 8 जून तक आयोजित किया गया था। इस सेमिनार में, विमानन से जुड़े लगभग 90 लोगों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में, विमानन विभाग में कार्यरत उप प्रबंधक श्री वेदांत झकरवार और श्री दीपांकर को भी शामिल किया गया था।

सेमिनार के दौरान, विमानन बीमा से संबंधित कई महत्वपूर्ण विषयों पर पीपीटी देखने का मौका मिला। रूस-यूक्रेन युद्ध और ड्रोन के भविष्य के बारे में हुए पैनल चर्चा ने सभी को अद्भुत जानकारी प्रदान की। इसके अलावा, बीमित, ग्राउंड हैंडलर्स, पायलट्स, ब्रोकर्स, अंडरराइटर्स जैसे विभिन्न विमानन सेक्टर से जुड़े व्यक्तियों के साथ भी संवाद करने का और उनके

साथ ज्ञान आदान-प्रदान करने का मौका मिला। इन संवादों से, उनके अनुभवों और ज्ञान से हमें अधिक समझ मिली और हमने अपनी बीमा सेवाओं को सुधारने के लिए नए विचार प्राप्त किए।

सेमिनार के दौरान, दो खास गतिविधियाँ भी आयोजित की गईं। पहली गतिविधि में, हमें एक नए स्टार्टअप एयरलाइन के लिए विचार करने का मौका मिला, जिसमें हमें निवेशकों से निवेश लेने की कोशिश करनी थी। यह अवसर हमारे लिए एक अद्भुत अनुभव साबित हुआ, जिससे हमने अपने आयोजन और बिजनेस योजना को बेहतर बनाने के लिए अनमोल सुझाव प्राप्त किए।

दूसरी गतिविधि में, हमें ब्रोकर की भूमिका निभानी थी, और हमारी एयरलाइन के लिए बीमा प्लेसमेंट पूरा करना था। यह कार्यक्रम भी हमारे लिए अद्भुत सीख और अनुभव से भरा था, जिससे हमने अपनी पेशेवर नौकरी में अधिक आत्मविश्वास प्राप्त किया।

इसके अलावा, सेमिनार के बाद हमें कुछ समय मिला लंदन शहर घूमने के लिए। हमने लंदन आई, टावर ब्रिज, टावर ऑफ लंदन म्यूजियम, बकिंगम पैलेस, ग्रीनविच पार्क आदि का दौरा किया, जो हमारे लिए अद्भुत और साथ ही रोचक अनुभव साबित हुआ।

समग्र रूप से, विलिस विमानन बीमा सेमिनार एक अच्छा अनुभव था। यह हमें विमानन बीमा उद्योग के विभिन्न पहलुओं से जोड़कर एक मेज़बानी का अवसर प्रदान करता है जो न केवल हमारे विकास में मदद करता है, बल्कि हमें इस उद्योग के साथ संबंधित नवीनतम और उत्थानशील विकसित नीतियों और प्रथाओं का भी अध्ययन करने का मौका देता है। इससे हमारे विमानन बीमा सेवाओं की गुणवत्ता और प्रभाव को सुनिश्चित करने के लिए एक सुविधाजनक मंच भी प्रदान होता है।

● वेदांत झकरवार, उप प्रबंधक

निगम में प्रशिक्षण कार्यक्रम

अ) विविध आंतरिक प्रशिक्षण-



1 अप्रैल, 2023 से 30 जून, 2023 की अवधि के दौरान प्रशिक्षण विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण निम्नवत है :

1. प्री-प्रमोशन परीक्षा प्रशिक्षण- पदोन्नति अभ्यास मई के महीने में हुआ. पदोन्नति क्षेत्र में आने वाले सभी कर्मचारियों को पदोन्नति पूर्व परीक्षा प्रशिक्षण प्रदान किया गया था. प्रशिक्षण भारतीय बीमा संस्थान, बीकेसी में आयोजित किया गया था.



प्रशिक्षण विभिन्न विभागों के वरिष्ठ और अनुभवी अधिकारियों द्वारा प्रदान किया गया था.

2. एमएस आउटलुक का प्रभावी उपयोग- आईटीएमजी विभाग ने संगठन के अधिकारियों के लिए एमएस आउटलुक के प्रभावी उपयोग पर एक प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया. प्रशिक्षण आईटीएमजी विभाग के अधिकारियों द्वारा प्रदान किया गया था. प्रशिक्षण सत्र के अंतर्गत शामिल विषय इस प्रकार थे:

- 1. माइक्रोसॉफ्ट आउटलुक का अवलोकन:** आउटलुक की मुख्य सुविधाओं और कार्यक्षमताओं को समझना.
- 2. ईमेल प्रबंधन:** ईमेल को व्यवस्थित करने, वर्गीकृत करने और प्राथमिकता देने के लिए सर्वोत्तम अभ्यास.
- 3. कैलेंडर और शेड्यूलिंग:** कैलेंडर सुविधा का उपयोग ऑप्टिमाइज़ करना, मीटिंग शेड्यूल करना और अपॉइंटमेंट्स प्रबंधित करना.
- 4. संपर्क प्रबंधन:** संपर्कों, वितरण सूचियों और पता पुस्तिकाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना.
- 5. कार्य और अनुस्मारक प्रणाली:** बेहतर उत्पादकता के लिए आउटलुक की कार्य प्रबंधन क्षमताओं का लाभ उठाना.

6. उन्नत सुविधाएँ: आउटलुक में उन्नत सुविधाओं और समय-बचत तकनीकों की खोज करना.

प्रशिक्षण का उद्देश्य पूरे संगठन में संचार प्रथाओं को संरेखित करना था.

3. सीवीओ द्वारा निवारक सतर्कता- जीआईसी री के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री अलगर सामी द्वारा इस सत्र का आयोजन किया गया. इसमें निगम के एक बैच के वरिष्ठ प्रबंधकों को शामिल किया गया. सभी स्तरों पर और सभी कार्यात्मक क्षेत्रों में निवारक सतर्कता उपायों की संवेदनशीलता पर आधारित सत्र था.

4. चैट जीपीटी और एआई टूल्स का उपयोग- इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में आईटीएमजी के अधिकारियों को चैट जीपीटी और एआई टूल्स का उपयोग करने पर लाइव और इंटरैक्टिव प्रशिक्षण सत्र में भाग लेने के लिए नामांकित किया गया था. चैट जीपीटी और अन्य एआई टूल उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री का तेजी से और अधिक कुशलता से उत्पादन करके, ग्राहकों

को संलग्न करके, ग्राहक सहायता प्रदान करके, दोहराए जाने वाले कार्यों को सुव्यवस्थित करके प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त देते हैं. इससे व्यवसायों को वक्र से आगे रहने और भीड़ भरे बाजारों में खड़े होने में मदद मिलती है.

आ) घरेलू प्रशिक्षण-

1. सेवानिवृत्त अधिकारियों के लिए कार्यक्रम- सेवानिवृत्त के



पश्चात व्यक्ति एक नए चरण में प्रवेश करता है. यह कई वर्षों के करियर में होने वाले कुछ अन्य बदलावों के विपरीत है. कई नई चिंताएं पैदा होती हैं, वित्तीय और सामाजिक उनमें से पहले हैं, जो तत्काल ध्यान देने की मांग करते हैं. कई वर्षों के व्यस्त कार्यक्रम के बाद, अचानक कर्मचारी अपने जीवन में एक सर्वव्यापी शून्य महसूस करते हैं. इस चरण को दूर करने के लिए कर्मचारी का मार्गदर्शन करना और अपने अनुभव और ऊर्जा को समाज की बेहतरी के लिए पुनर्निर्देशित करना अपने आप में एक कला है. सेवानिवृत्त होने वाले व्यक्ति के पास सभी के लाभ के लिए और इस तरह खुद के लिए भी योगदान करने के कई रास्ते होते हैं. हालांकि, सेवानिवृत्ति के बारे में मन कई नकारात्मक विचारों से भी जुड़ा हुआ है. संगठनों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे सेवानिवृत्त होने वाले व्यक्ति की देखभाल करें ताकि उन्हें सेवानिवृत्ति का व्यापक दृष्टिकोण लेने में सक्षम बनाया जा सके और उन्हें जीवन के नए चरण का प्रभार लेने के लिए आंतरिक नियंत्रण का एक उपाय करने में मदद मिल सके, जिसमें प्रकृति व्यक्ति को धकेल रही है.

सेवानिवृत्त अधिकारियों के लिए कार्यक्रम राष्ट्रीय बीमा अकादमी द्वारा प्रदान किए जाने वाले सबसे प्रसिद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम में से एक है. तिमाही के दौरान संगठन से सेवानिवृत्त होने वाले 08 अधिकारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया.

इ) विदेशी प्रशिक्षण-

कोविड - 19 महामारी की अवधि के बाद, निगम ने फिर से विदेशी प्रशिक्षण कार्यक्रमों को शुरू किया.

1. मैकलेरेंस एविएशन इंश्योरेंस ट्रेनिंग 2023 और डब्ल्यूटीडब्ल्यू इंटरनेशनल एविएशन इंश्योरेंस कोर्स

इन दोनों अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में जीआइसी री के विमानन विभाग के दो अधिकारियों ने भाग लिया. बीमा उद्योग में विमानन एक तेज गति से बढ़ता हुआ क्षेत्र है जिसके लिए उच्च स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं.



● मनाली मधुसूदन पोटे, उप प्रबंधक

निगमीय सामाजिक दायित्व : सीएसआर गतिविधियाँ



होलिया परियोजना में भागीदारी -

भारतीय साधारण बीमा निगम के सहयोग से, आश्रय फाउंडेशन ने गुजरात के पाटन जिले के संतालपुर तालुका के गांवों में वाटरशेड विकास और कृषि उत्पादकता के एक हिस्से के रूप में 60 होलिया के निर्माण के लिए परियोजना को पूरा करने के लिए काम शुरू किया. होलियास भूमिगत जल के पुनः भंडारण के रूप में कार्य करते हैं. यह अत्यधिक बारिश के दौरान खेतों में पानी भरने से होने वाले नुकसान पर रोकथाम करता है और पानी की कमी के समय कृषि कार्यों और घरेलू काम के लिए पानी प्रदान करता है. डेढ़ महीने की अवधि में, आश्रय ने 6 गांवों में 60 होलियों का निर्माण पूरा किया जो गुजरात के पाटन जिले के संतालपुर तालुका के लोगों को आजीविका सुरक्षा प्रदान करने में प्रभावी भूमिका प्रदान करेगा.

पाटन में संतालपुर तालुका का क्षेत्र एक अर्ध-शुष्क क्षेत्र है जिसमें लगभग 1 लाख लोगों की आबादी शामिल है. संतालपुर तालुका के गांव सीमावर्ती क्षेत्रों के पास स्थित हैं, जिससे ग्रामीणों के लिए अन्य गांवों के लिए सुलभ सेवाओं तक पहुंचना

मुश्किल हो जाता है. लोगों को जलवायु प्रतिकूलताओं का सामना करना पड़ता है जो आजीविका और पशुधन को प्रभावित करने वाली समस्याओं की एक शृंखला बनाता है. ग्रामीण कभी भी मौसम का एक स्थिर चक्र नहीं देखते हैं जिसके



कारण उनकी दैनिक जीवन शैली और कृषि गतिविधियों को बाधित करता है. जब सूखा पड़ता है, तो भूमि का मुश्किल से उपयोग किया जाता है और अत्यधिक वर्षा के मामलों में खेत पानी से भर जाते हैं और अंततः मिट्टी और उपज फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं. यह पूरी स्थिति एक किसान को कृषि भूमि और मवेशी होने के बावजूद लाचार बना देती है, इस प्रकार आजीविका कमाने के लिए उन्हें मजदूरी करनी पड़ती है.

होलिया के निर्माण से अत्यधिक वर्षा के दौरान भरे हुए पानी को साफ करके कृषि उपज में वृद्धि होगी और साथ ही एक भूमिगत भंडारण के रूप में कार्य किया जाएगा जहां से आवश्यक उद्देश्यों के लिए पूरे वर्ष पानी का उपयोग किया जा सकता है. यह पानी की बर्बादी को भी रोकेगा और घर को कनेक्शन प्रदान करके पानी के प्रभावी उपयोग को बढ़ाएगा.

होलिया निर्माण प्रक्रिया :



कुल मिलाकर 60 होलियों का निर्माण किया गया था. बनाए गए होलिया के आधार पर गांवों का विभाजन निम्नलिखित है:

गांवों	निर्मित होलियाओं की संख्या	प्रत्यक्ष लाभार्थी
बमरोली	10	60
दाभी	10	60
जामवाड़ा	10	60
कोलीवाड़ा	10	60
कोरडा	10	60
अनरोट	10	60
कुल	10	360

परियोजना की समयरेखा

- प्रारंभिक सर्वेक्षण /
- लाभार्थी की पहचान
- सामग्री की खरीद
- होलिया का निर्माण
- कर्मचारियों की भर्ती
- निगरानी और मूल्यांकन

च
र
ण
1

- होलिया का निर्माण
- होलिया के उपयोग हेतु प्रशिक्षण
- निगरानी और मूल्यांकन

च
र
ण
2

- होलिया का निर्माण
- होलिया के उपयोग पर प्रशिक्षण
- निगरानी और मूल्यांकन
- प्रभाव आकलन

च
र
ण
3

प्रत्येक चरण 15 दिनों की अवधि का होता है। जीआईसी री के सहयोग से जल संग्रह 7 फरवरी 2023 को शुरू हुआ और 24 मार्च 2023 को पूरा हुआ।

होलिया का निर्माण एक लागत प्रभावी समाधान है क्योंकि यह खेत को पानी के जमाव से बचाता है और पूरे वर्ष प्रभावी उपयोग के लिए वर्षा जल को संग्रहीत करता है। प्रतिकूल मौसम की स्थिति के बावजूद पानी की उपलब्धता के कारण किसान वर्ष में एक फसल के बजाय वर्ष के सभी तीन मौसमों में फसल लगाने में सक्षम होंगे। होलिया के पानी के उपयोग के साथ, उपलब्ध गैर-खारे पानी के साथ नमी की मात्रा के



संदर्भ में भूमि की गुणवत्ता और मिट्टी के स्वास्थ्य में भी सुधार होगा क्योंकि पहले उच्च लवणीय सामग्री के कारण भूमि की अवशोषित क्षमता कम थी।

सीएसआर विभाग ने 2022-23 में होलिया (जिसे भुंगरू के नाम से भी जाना जाता है) की इस विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त तकनीक को अपनाया। यह कृषि उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए



पर्याप्त पानी प्रदान करने के लिए एक तरह का अभिनव और स्मार्ट समाधान है।

● स्नेहा नायर, सहायक महाप्रबंधक

कार्मिक समाचार



आगमन :

सुश्री लिपिका गोयल, श्री अक्षय रामस्वामी और सुश्री गायत्री एम. का सहायक प्रबंधक के रूप में निगम में आगमन हुआ.

पदोन्नतियाँ :

महाप्रबंधक (स्केल VII के रूप में पदोन्नति) :

श्री सरोज कुमार रथ, सुश्री जयश्री बालकृष्ण और श्री बालकृष्ण वारियार महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नत हुए.

उप महाप्रबंधक (स्केल VI के रूप में पदोन्नति) :

सुश्री मनाली पतके, श्री विजय बापूराव साळवे, श्री सतीश कुमार एस., सुश्री राधिका के. रविशेखर और सुश्री बबीता अनिलकुमार अमीन की उप महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति हुई.

सहायक महा प्रबंधक (स्केल V के रूप में पदोन्नति) :

सुश्री श्वेता मोगावीरा, सुश्री उज्ज्वला सकळ्ळे, सुश्री गीता नायर, सुश्री विद्या भट्ट, सुश्री अनीता सुदेशर शर्मा, सुश्री प्रज्ञा प्रकाश प्रभु और श्री ज्ञानराज बालकृष्ण गावडे की सहायक महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति हुई.

मुख्य प्रबंधक (स्केल IV के रूप में पदोन्नति) :

सुश्री सुषमा संजय कडू, सुश्री संजना संतोष मोहिते, श्री जयेश नरेंद्र मेहता, सुश्री प्रतिभा पी. कांबळे, सुश्री लता दिलीप मुधाले, सुश्री नीता पंकज राठौड़, सुश्री लक्ष्मी सोमनाथ बनर्जी, सुश्री रीमा महेश तलरेजा, सुश्री अनुश्री आनंद, श्री संजीव शंकर, सुश्री रेनी चौधरी राऊत, श्री शैलेंद्र चड्ढा, श्री वरुण भारद्वाज और श्री चिराग रमनलाल व्यास की मुख्य प्रबंधक के रूप में पदोन्नति हुई.

वरिष्ठ प्रबंधक (स्केल III के रूप में पदोन्नति) :

सुश्री स्नेहा सुरेश मृगल, सुश्री सुरभि निलेकर, श्री योगेश कुमार, सुश्री दीप्ति अत्री, श्री आशीष कुमार आर्य, श्री सौमाद्री दास, श्री प्रसाद दत्तात्रय गोरे, सुश्री निहारिका राठी, सुश्री पायल मालिक, श्री लोकेश सिरोहिया, सुश्री खुशबू रावल, सुश्री निहारिका सुथार, श्री देशराज चढ़ार, श्री शांतनु लक्ष्मण फुलावरे, श्री पंकज कुमार, श्री ईशान प्रशांत सोमैया और श्री समीर सापधरे की वरिष्ठ प्रबंधक के रूप में पदोन्नति हुई.

उप प्रबंधक (स्केल II के रूप में पदोन्नति) :

श्री अमित कुमार यादव, श्री विकास ढाली, श्री कौस्तुभ दिलीप तेलरांधे, सुश्री ईशा वासवती, श्री हिमांशु रावत, श्री दीपांकर, श्री सौमित्र चौधरी, श्री आतिश मधुकर दिघाडे, श्री अनुराग प्रकाश राऊळ, श्री प्रवीण नेरकर, श्री विनय जाबरिया, श्री सुभाष कुमार, सुश्री अनीशा मंडल, सुश्री संचारी सेन गुप्ता, श्री सक्षम धंजाल, श्री विशाल आर., श्री दीपक कुमार, श्री भूपति आर., श्री धीरज कुमार शर्मा, श्री राजेश कुमार, श्री कुमार गौरव, श्री सागर शेळके की उप प्रबंधक के रूप में पदोन्नति हुई.

सहायक प्रबंधक (स्केल I के रूप में पदोन्नति) :

श्री जयंती केशवलाल बारिया, सहायक प्रबंधक के रूप में पदोन्नत हुए.

विदेशी तैनाती :

उप प्रबंधक, सुश्री निवेदिता पाल की मलेशिया शाखा, तथा उप प्रबंधक, श्री दीपन पांजा की जीआइसी री दक्षिण अफ्रीका के कार्यालय में तैनाती की गई.

सेवािवृत्ति :

श्रीमती मधुलिका भास्कर, महाप्रबंधक, श्रीमती सुनीता चौटा, मुख्य प्रबंधक, श्री भगवान रामचंद्र मालप, वरिष्ठ सहायक, श्री अरविंद गांगण, वरिष्ठ सहायक, श्री गंगा राम पळसमकर, सहायक, श्री विलास राणे, सहायक और श्री कृष्ण तरळ, सहायक सेवानिवृत्त हुए.

ऐच्छिक सेवानिवृत्ति :

श्री इंद्रजीत सिंह, महाप्रबंधक एवं श्री नामदेव कदम सहायक महाप्रबंधक ने ऐच्छिक सेवानिवृत्ति ली.

‘क्षितिज’ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ...

● मानव संसाधन विभाग

भारत के महान संत और ऋषि-मुनि



वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति की तीन विशेषताएँ रही हैं। यह संस्कृति आध्यात्मिक संस्कृति है, यह संस्कृति सुविकसित सभ्यता है, यह संस्कृति वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखती है। वह कौन है जो संस्कृति के इन तीन पहलुओं का पोषण करता है और इसे युगों युगों तक जीवित रखता है? वैदिक काल से इस संस्कृति के उच्च मूल्यों की सुगंध पूरे विश्व में फैलाने वाले संस्कृति पुरुष की भूमिका किसने निभाई है? विश्व के अनेक कोनों से इस सभ्यता(संस्कृति) पर अनेक आक्रमण हुए, फिर भी दस हजार वर्षों से भी अधिक समय से विद्यमान इस सभ्यता (संस्कृति) की रक्षा आज तक किसने की?

ऐसे अनेक प्रश्नों के उत्तर में इतिहास द्वारा इस संस्कृति के महान ज्योतिषियों, ऋषि-मुनियों, सन्तों, आध्यात्मिक भक्त कवियों का नाम उच्चारित किया जाता है। प्रत्येक राष्ट्र या प्रत्येक संस्कृति की नींव में किसी न किसी महान नेता का योगदान होता है, परंतु विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी भारतीय संस्कृति असाधारण है। क्योंकि इस संस्कृति या राष्ट्र की नींव किसी नेता या राजघराने के बजाय महान संतों और संतों के दिव्य बलिदान से बनी है।

भारतीय सभ्यता के विशाल विस्तार में हजारों सहस्राब्दियाँ बीत चुकी हैं। पश्चिम में, जब सहस्राब्दी समाप्त होती है, तो 'मेन ऑफ द मिलेनियम' के रूप में राजनीतिक या सामाजिक नेताओं की एक सूची कृतज्ञतापूर्वक प्रकाशित की जाती है। यदि भारत के राजनीतिक या सामाजिक नेताओं को 'मेन ऑफ द मिलेनियम' के रूप में सूचीबद्ध किया जाए, तो इस संस्कृति के आधार स्तंभ संतों की एक बड़ी सूची सामने आएगी, यह निश्चित है। आजकल 'सेलिब्रिटी' का दौर चल रहा है। भारतीय संस्कृति ने कभी भी इन संतों के अलावा किसी अन्य को 'सेलिब्रिटी' के रूप में अपने स्तंभों में नहीं रखा है।

शक्तिशाली सम्राट या शासक कभी भी भारतीय हृदय पर शाश्वत शासन स्थापित नहीं कर सके। लेकिन जिन महान संतों और ऋषियों ने सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन के लिए अपनी संपत्ति, शक्ति और ऊर्जा समर्पित कर दी, वे

भारतीय हृदय के सच्चे सम्राट थे और रहेंगे। क्योंकि जिनको कोई स्वार्थ नहीं है, जिन्होंने अपना सर्वस्व त्याग कर परमार्थ और परोपकार को अपने जीवन का कर्तव्य बना लिया है, जिन्होंने सभी प्राणियों के सच्चे हितकारी बनकर असंख्यों का जीवन उद्धार किया है- वे संत ही भारतीय संस्कृति के सच्चे आधार हैं। 'द फाउंडेशन ऑफ इंडियन कल्चर' (The Foundations of Indian Culture) पुस्तक में महान विचारक श्री अरबिंदो लिखते हैं: "भारतीय संस्कृति के शाश्वत सत्य को उज्ज्वल / देदीप्यमान बनाए रखने के लिए हमेशा संतों, आध्यात्मिक विचारकों और प्रखर बुद्धिमान तपस्वियों की शिक्षाओं/ उपदेशों की अविरल धारा की आवश्यकता रही है।"

विश्व के नास्तिकों के नेता, प्रसिद्ध बौद्धिक यूरोपीय लेखक समरसेट मौघम (Somerset Maugham) भारत आये, संतों की पवित्र भावना से सराबोर होकर आस्तिक बन गए और लिखा: "यह सोचना बहुत बड़ी भूल है कि भारत के महान संत निरर्थक जीवन व्यतीत करते हैं। वे दुनिया के अंधकार में चमकते प्रकाशपुंज हैं। जब एक सामान्य व्यक्ति उनका, उनके आदर्शों का सम्मान करता है, तो इसका उन लोगों के जीवन पर बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसे परम पवित्र एवं उत्तम चरित्रवान महापुरुष का प्रभाव इतना फैलता है कि सत्य की खोज में निकले लोग स्वतः ही उनकी ओर आकर्षित हो जाते हैं।"

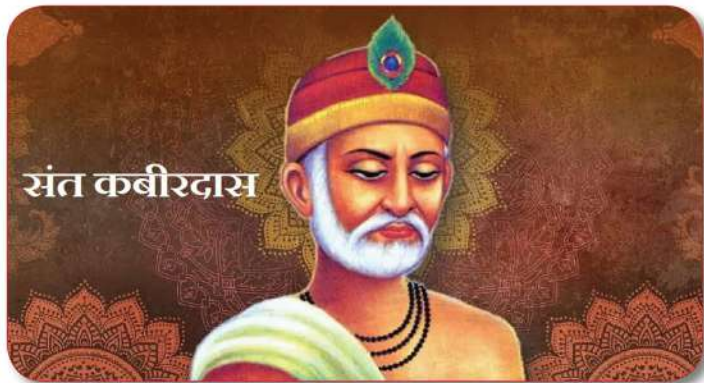


जे. डब्ल्यू मैक्रिंडल नामक एक पश्चिमी विचारक ने मैगस्थनीज की पुस्तक 'इंडिका' का उदाहरण देते हुए अपनी पुस्तक में लिखा है कि जब सिकंदर भारत पर आक्रमण करने के लिए निकला, तो उसके गुरु ने उसे भारत से लौटने पर दो उपहार लाने का आदेश दिया: (1) गीता, (2) दार्शनिक संत. सिकंदर ने सेनापति को आदेश दिया कि वह भारत के संतों में से एक को ढूँढे और उसे सम्मान के साथ ले आये। सैनिक की मुलाकात तक्षशिला विद्यापीठ के दंडी स्वामी से हुई। दण्ड महर्षि साधारण रूप से एक पर्ण कुटिया में रहते थे। इस सैनिक ने उनसे कहा, 'बादशाह सिकंदर आपको बुला रहे हैं। तुम आओगे

तो बड़े-बड़े उपहार देंगे.' दंड महर्षि ने कहा, 'मुझे सिकंदर से मिलने की कोई इच्छा नहीं है, न ही मुझे उसके कचरारूपी उपहार चाहिए.' जब यह बात सिकंदर को पता चली तो वह क्रोधित हो गया और बोला, 'अगर वह नहीं आएगा तो उसका सिर काट दिया जाएगा.' यह सुनकर दण्ड महर्षि बोले, 'हम मृत्यु से नहीं डरते. 'भारत का साधु तो बिना माथे/सिर के जीता है.' जब सिकंदर ने यह समाचार सुना तो उसे आश्चर्य हुआ. तब वह नम्रतापूर्वक उसके पास आया और पूछा, 'आप बिना सिर के जीने को कैसे कहते हैं?' दण्ड महर्षि ने कहा, 'हम शरीर को अपना स्वरूप नहीं मानते. हम स्वयं को आत्मा समझते हैं. शरीर नाशवान है और आत्मा अमर है, इसलिए यदि हमारे पास धड़ के ऊपर सिर है, तो भी हम आत्मा हैं और यदि नहीं, तो भी हम आत्मा हैं.' यह सुनकर बादशाह सिकंदर ने इस साधु की साधुता के आगे अपनी सत्ता और समृद्धि तुच्छ लगी. उसने इस साधु का सत्संग किया और कृतज्ञ हो गया.

डॉ राधाकृष्णन* (दार्शनिक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति): "आज हम समाज में सुख और शांति से रहते हैं, इसका कारण वैज्ञानिक खोज नहीं है, बल्कि हमारे बीच विचरण करने वाले संत है."

'हरिजन बंधु' में गांधीजी कहते हैं: 'भारत के इतिहास का अध्ययन करते समय मेरा ध्यान अनेक राजाओं और उनके सैनिकों की ओर नहीं, बल्कि उन लोगों की ओर जाता है जिन्होंने जनता को सच्चे सेवक दिए. मैं देखता हूँ कि विभिन्न साधु-संतों ने यात्रा करके और घर-घर जाकर भगवान की दया का संदेश फैलाकर जितनी राष्ट्रीय सेवा की है, उतनी किसी और ने नहीं की है. हिंदुस्तान का नाम दुनिया में सबसे आगे होने का कारण यह है कि साधु-संतों ने लोगों के चरित्र को विकसित किया है. यहां तक कि यूरोप, चीन, जापान जैसे देशों में भी साधु-संत ही लोगों के चरित्र का घड़न कर रहे हैं.'



भारत के राष्ट्रीय विकास के लिए इन संतों ने समय-समय पर जो महान प्रयास किए हैं, उनके बारे में विनोबा भावे के विचार स्मरणीय हैं: 'कई संतों ने इस देश की मिट्टी को पदयात्रा से पावन किया है, और उन्होंने ही इस देश को एक बनाया है. भारत के एक संत शिरोमणि शंकराचार्य ने वर्षों यहां विचरण किया है. शंकराचार्य 15 वर्ष, रामानुज 12 से 14 वर्ष, वल्लभाचार्य 18 वर्ष, शंकरदेव 12 वर्ष, नामदेव 13-14 वर्ष, नानक 18 से 20 वर्ष और कबीर ने 25 से 30 वर्ष

तक पदयात्रा की है. इस भारतीय संस्कृति के पीछे इतना उज्ज्वल इतिहास है. ये भारत की परंपरा है, जिसकी वजह से इतना बड़ा भूखण्ड एक बना है. इस प्रकार हमारे पूर्वजों ने सम्पूर्ण भारत की संस्कृति को एक करने की रट लगा दी थी. यहाँ की हवा के कण कण में साधु-संतों की तपस्या है. यह संतों और सत्पुरुषों की भूमि है. यहाँ का समस्त आचार-विचार सत्पुरुषों द्वारा प्रदत्त है. भारत के लगभग सभी लोग बिना नहाए दोपहर का खाना नहीं खाते. चाहे कितनी भी ठंड हो! ऐसी सभी बातें महापुरुषों ने सिखाई हैं. हजारों वर्षों के प्रयास के बाद, मनुष्य ने एक स्वस्थ विवेक विकसित किया है. कुछ निष्ठाएं पक्की हुई हैं. सही और गलत की अवधारणा स्थिर हुई है. मनुष्य की सही-गलत की समझ, उसका विकसित विवेक किसी राजा-महाराजा ने नहीं, अपितु संतों ने बनाया है. यदि ये संत-महापुरुष न होते तो हम पशु ही बने रहते. यदि उन्होंने हमें जागृत न किया होता तो नैतिकता नहीं होती. संतों और महापुरुषों की तपस्या के कारण ही भारत एक हुआ है और एक उज्ज्वल भारतीय संस्कृति का विकास हुआ है. यहां के लोकमानस का संवर्धन संतों द्वारा किया गया है.

यदि आचार्य कपिल मुनि ने सांख्य शंख न बजाया होता, महर्षि गौतम और पतंजलि ने योग सूत्र न बुना होता अथवा अन्य आचार्यों ने दार्शनिक चिंतन न किया होता तो भारतीय दर्शन परंपरा की ठोस नींव कैसे बनती? यदि क्षुद्र कुल में जन्मे ऋषि शंबूक जैसे तपस्वी ऋषियों ने तप और तपस्या की शक्ति को न दर्शाया होता, तो संस्कृति की इस विरासत को कौन जीवित रखता? यदि महर्षि यास्क जैसे भाषाविज्ञान के आरंभिक प्रणेता भारतीय धरती पर अवतरित न हुए होते तो भारत को अमर गिर्वाणगिरा कैसे विरासत में मिलता? उपनिषद काल के महर्षि याज्ञवल्क्य या महर्षि पंचशाखा, महर्षि उदालक या महर्षि अरुण, नचिकेता या सनकादिक* जैसे ऋषियों के संवाद हजारों साल बाद भी हमें आध्यात्मिकता की ताजगी और गहराई का अनुभव कराते हैं.

हजारों साल पहले यदि महर्षि वाल्मिकी और महर्षि व्यास जैसे महान संतों ने रामायण और महाभारत न लिखा होता तो क्या भारत, भारत ही रहता? आदि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, माधवाचार्य आदि के बिना वैदिक दर्शन के रहस्यों को कौन प्रस्तुत करता? भारतीय ऋषि-मुनि भी विज्ञान के सर्वोच्च शिखर पर थे. महर्षि लगध, महर्षि आत्रेय, महर्षि भारद्वाज, महर्षि दीर्घतमा, महर्षि आपस्तंब, महर्षि बोधायन आदि द्वारा की गई वैज्ञानिक आविष्कार अद्भुत और बेजोड़ हैं.

याज्ञवल्क्य ऋषि जैसे अनेक संतों ने स्मृतिशास्त्र की रचना कर भारतीय संस्कृति की नैतिक छवि का निर्माण किया. पारिवारिक संविधान का निर्माण भी इन्हीं स्मृतिकार संतों द्वारा किया गया है. भारतीय ऋषि-मुनियों ने भी माता-पिता, पति-पत्नी, बेटा-बेटी, भाई-बहन, बहू-दामाद, सास-ससुर जैसे पारिवारिक समीकरण और उनके नीति नियम देकर परिवार की एक अनुठी संस्कृति विकसित की है. मध्यकालीन भारत में एक ओर आक्रमणों का दौर चला तो दूसरी ओर साधु-संतों द्वारा चलाये गये भक्ति आंदोलनों के कारण ही लोगों की आस्था जीवित रही. चौदहवीं

शताब्दी के दौरान, भक्ति आंदोलन तीव्र रूप पूरे भारत भर में फैल गए . सभी एक सूत्र में पिरोया. दक्षिण से उत्तर और पश्चिम से पूर्व तक साधु-संतों के ये भक्ति आंदोलन व्यापक थे. भक्ति आंदोलन की नींव में रामानुजाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, माधवाचार्य जैसे महान संत- आचार्यों का योगदान था. साधु-संस्था के प्रभाव में, गृहस्थाश्रम भक्त भी उसी उच्च स्थिति में परिपक्व हुए. दक्षिण से शुरू हुई भक्तों की परंपरा समय के साथ पूरे भारत में फैल गई. रामानुजाचार्य और बाद की परंपराएँ दक्षिण में, ऊँच-नीच का भेद मिटाने और सभी को भगवत् भक्ति में जोड़ने के लिए भक्ति-आंदोलन की प्रक्रिया शुरू की गई. रोहिदास, कबीर, धन्ना, पीपाजी आदि ने भी भक्ति आंदोलन को देश के विभिन्न हिस्सों में फैलाया. महाराष्ट्र में विठोबा के उपासक नामदेव और वारकरी परंपरा ने, बंगाल में ज्ञानदेव और जयदेव परंपरा ने अद्भुत आंदोलन फैलाया. पंजाब में नानकदेव परंपरा और पूर्व में शंकरदेव परंपरा और पश्चिमी भारत में मीरा-नरसिम्हा परंपरा ने भक्ति आंदोलन को मानो हिमालय तक फैला दिया. कृष्णभक्ति परंपरा में सूरदास और परमानंददास, कुंभनदास आदि का योगदान तो अद्वितीय है ही, साथ ही राधा-वल्लभ, गौड़ीय, हरिदासी और सखी संप्रदाय का योगदान भी अद्वितीय है. दादूपंथियों में दादू दयाल, रज्जब और सुन्दरदास का योगदान विशेष है. ऐसे कई संत और भक्त हैं जो कबीर परंपरा के साथ-साथ नाथ परंपरा से भी भक्ति आंदोलन में शामिल हुए हैं. इसके अलावा, महिलाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली मीराबाई, आण्डाल (दक्षिण की मीरा), लल्लेश्वरी विष्णुप्रिया आदि ने भक्ति की एक अनोखी लगन लगाई थी .

गांवों के अनपढ़ लोगों में भक्ति की रोशनी फैलाने वाले लोक संतों का योगदान भी विशेष रहा है. इसमें गंगासती और मूलदास, शीलदास आदि महिला संतों की भेंट हैं. संत-स्थानों द्वारा हरिनाम-स्मरण, गौ-सेवा तथा पशु-पक्षियों की सेवा के कार्यों को अपनाकर व्यापक जनसमूह को ऊपर उठाने तथा गौरवान्वित करने के अनेक उदाहरण हैं.

भगवान श्री राम या भगवान श्री कृष्ण भारत की रगों में बहने वाले रक्त की लय बन गए हैं. इसकी वजह है उनके प्रेरक किरदारों की घर घर गूँजती गाथाएँ . हजारों वर्ष पहले यदि महर्षि वाल्मिकी और महर्षि व्यास जैसे महान संतों ने ये चरित्र न लिखे होते तो क्या भारत भारत ही रहता? विचारकों का कहना है कि यदि भारत से राम और कृष्ण की छवियाँ हटा दी जाएँ तो यह निर्विवाद है कि भारत, भारत बन जाएगा.

प्रसिद्ध अमेरिकी इतिहासकार विल ड्यूरन भारतीय नैतिक मूल्यों के बारे में लिखते हैं: “भारतीयों की व्यावसायिक नैतिकता बहुत ऊँची थी. सम्राट अलेक्जेंडर के दरबार के एक यूनानी इतिहासकार का कहना है कि भारतीय 'सद्भाव के लिए उल्लेखनीय हैं, वे इतने चरित्रवान हैं कि उन्हें शायद ही कभी दंड या जुर्माने का सहारा लेना पड़ा हो , उन्हें अपने घरों में ताला लगाना नहीं पड़ता है या एक-दूसरे के साथ व्यवहार में लिखित गारंटी नहीं लेनी पड़ती है. वे अत्यधिक विश्वसनीय हैं.”

प्रो. एच एच विल्सन भारती के प्राचीन युद्ध कानूनों को शिष्ट

और मानवीय बताते हुए कहते हैं कि जब भारत के नायकों ने युद्ध लड़े, तब भी उन्होंने नीति से कभी समझौता नहीं किया.

मार्को पोलो ने भारतीयों की ईमानदारी और सच्चाई के गुण गाए हैं. इसलिए, 19वीं सदी में भारतीयों के प्रति अपने दृष्टिकोण का वर्णन करते हुए, मैक्समुलर ने लिखा: “न केवल ईमानदारी, बल्कि उदारता, सहिष्णुता, खुलापन, बुद्धिमत्ता, लचीलापन, विनम्रता, वफादारी, सज्जनता, स्वतंत्रता, मेहनतीपन और विज्ञान के प्रति प्रेम के कारण भारतीय आज भी उल्लेखनीय हैं.” वे कौन से महापुरुष थे जिन्होंने समय-समय पर समाज में इन नैतिक मूल्यों की स्थापना की?

वर्षों तक परधर्मी और विदेशी लोग विभिन्न उद्देश्यों से भारत की इस भूमि पर आते और आक्रमण करते रहे. उन्होंने बहुत सारी संपत्ति और जान गंवाई, लेकिन धार्मिक कट्टरता के कारण भारतीय संस्कृति पर भी आघात हुआ. भारतीय शास्त्रों की बहुमूल्य विरासत को मिटाने के लिए नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों को जला दिया. गाँवों और कस्बों से एक-एक करके धर्मग्रन्थ खोजे गये. इतना कुछ होने के बाद भी यह संस्कृति नष्ट नहीं हुई. कवि इकबाल की ये पंक्तियाँ कितनी सत्य है:

यूनान मिस्र रोमा सब मिट गए जहाँ से
अब तक मगर है बाकी नामोनिशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है, दुश्मन दौरे जहाँ हमारा .
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा...

यूनानी संस्कृति लुप्त हो गई. बेबीलोनियन, चाल्डियन जैसी सभ्यताएँ, जो टाइग्रिस और यूक्रेट्स नदी तल के बीच विकसित हुईं, नदी तल में समाहित हो गईं. मिस्र की सभ्यता पिरामिडों में समाहित हो गईं. दुनिया की विस्मयकारी रोमन सभ्यता अपने भव्य महलों के खंडहरों में ही बची हुई थी. जब-जब सदियों तक भारतीय संस्कृति पर आक्रमण होते रहे, मन्दिरों को नष्ट कर दिया गया, धर्मग्रन्थों को जला दिया गया, मूर्तियों को मिट्टी से ढक दिया गया, तलवार के बल पर हमारी संस्कृति पर ऐसे आक्रमणों और आक्रमणों का सिलसिला चलता रहा. हालाँकि, यह टूटा नहीं. ऐसी कौनसी संजीवनी होगी जो इस महान संस्कृति की प्रसिद्धि कभी फीकी न पड़ सकी ?

यह संजीवनी है - संत, साधु जो इस धरती पर अवतरित हुए.

सद्गुरु ब्रह्मानंद स्वामी ने अपने कीर्तन में गाया है:

संत परम हितकारी जगतमांही, संत परम हितकारी,
प्रभु पद प्रगट करावत प्रीति, भरम मिटावत भारी,
इसमें संत कबीरजी पूर्णतः सिद्ध करते हैं कि:
'संत न होत संसार में, तो जल जातो ब्रह्मांड ...'

● मनीष तिवाड़ी, उप प्रबंधक

दहेज - सामाजिक प्रगति में रोड़ा



दहेज ऐसी सामाजिक कुप्रथा है जो हमारे समाज की प्रगति में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है। शादी-विवाह के अवसरों पर वधु पक्ष द्वारा दिए जाने वाले महँगे सामान

तथा धनराशि को दहेज में शामिल किया जाता है।

सामान्यतः देखा जाता है कि किसी लड़के की जितनी बड़ी नौकरी या स्टेटस होगा, उसके अनुसार वहेज की माँग भी उतनी ही बढ़ती है। इसका अर्थ हुआ कि माता-पिता के लिए उनकी लड़की का विवाह करना एक चिंता बन जाती है क्योंकि बिना वहेज के लड़की के लिए अच्छा रिश्ता मिलना कठिन हो जाता है। यह तो वहेज प्रथा का प्रत्यक्ष परिणाम है। इसका परोक्ष और घातक प्रभाव तो लड़की के भविष्य पर पड़ता है क्योंकि माता-पिता अपनी सारी बचत लड़की को दहेज देने के लिए बचा कर रखना चाहते हैं। इसके कारण लड़की की शिक्षा को नज़रअंदाज कर दिया जाता है। दहेज गलत है, इस बात को जानते हुए भी यह कुप्रथा इतने सालों तक हमारे समाज में क्यों है? वहेज प्रथा के खत्म करने के लिए सरकार द्वारा कानून बनाने के बावजूद आज भी दहेज उतना ही चलन में है, क्योंकि समय के साथ यह मज़बूत ही हुआ है। यह समझने के लिए हमें वहेज की उत्पत्ति के बारे में समझना होगा।

दहेज की प्रकृति को देखने पर समझ आता है जब बेटे का ब्याह हो जाता है तो वह अपने उस संसार से अलग हो जाती है जहाँ वह पैदा हुई थी, जहाँ उसकी परवरिश हुई थी, जहाँ उसने अपनी दुनिया बसाई थी। शादी के बाद उसे एक नई जिंदगी शुरू करनी पड़ती है, जो किसी भी इन्सान के लिए कठिन है। यहीं से इस प्रथा का जन्म हुआ होगा। लड़की के माता-पिता गृहस्थी का सामान देकर उसकी नई दुनिया बसाने में मदद करते हैं। यह उस समय की बात है जब इन्सान शिक्षा, विज्ञान से बिलकुल अनजान था। उस समय के हिसाब से यह प्रथा गलत भी नहीं थी, क्योंकि तब बर्तन, चारपाई, कपड़े आदि कीमती चीजों में गिने जाते थे लेकिन वर्तमान परिदृश्य में इन सामान को मूल्य नहीं रह गया है।

प्राचीन भारतीय वाङ्मय में दहेज शब्द के शाब्दिक अर्थ को 'ददाति हिरण्यं जनक', अर्थात् विवाह के समय पिता द्वारा स्वर्ण/धन से जोड़ा गया है। यह धन उसका सम्पत्ति में उसका हिस्सा होता था। उस धन पर सिर्फ स्त्री का ही अधिकार रहता था, लेकिन अब नियम विकृत हो गए हैं। दहेज को एक ऐसा जरिया बना लिया गया है जिसके माध्यम से लड़की के साथ शोषण होने लगा है। पितृसत्ता व्यवस्था में हर सत्ता,

संपदा, शक्ति पर पुरुष के अधिकार ने जेंडर सौहार्द को खोखला कर दिया है। दहेज प्रथा का पालन करने से लड़की की सत्ता कमजोर हो रही है। एक तो वहेज के लिए पूँजी बचाने के लिए वह उस स्तर की शिक्षा से वंचित हो जाती है, जो किसी लड़के के लिए आराम से उपलब्ध होती है। दूसरा, वह पैतृक संपत्ति के अधिकारों से भी वंचित होती है। शिक्षा और संपत्ति के बिना महिला सशक्तिकरण कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

वर्ष 1960 में दहेज प्रतिबंध के लिए भारत सरकार ने कानून



भी बनाया था जिसमें दहेज लेने वाला और देने वाला दोनों को अपराधी माना गया है। कानून के होते हुए भी यह कुप्रथा समाज में मौजूद है क्योंकि इसकी जड़ें इतनी गहरी हैं कि यह सामाजिक जीवन-शैली का हिस्सा बन गया है। इस नियम में स्वेच्छा से दिए जाने वाले उपहारों को शामिल नहीं किया गया है जिसकी आड़ में वहेज का लेन-देन खुले तौर पर होता है। वहेज देने वाला भी अपराधी है, लेकिन धरातल स्तर पर उसके खिलाफ कार्रवाई करना आसान नहीं है। इसके कारण यह कुप्रथा मजबूत होती जा रही है। वहेज लड़की के शोषण और प्रताड़ना का जरिया बन जाता है, इसके कारण विवाह संबंध तक टूट जाते हैं। जो प्रथा एक मदद के तौर पर शुरू हुई होगी, समय के साथ उसने ऐसा विकराल रूप ले लिया है।

दहेज जैसी सामाजिक कुप्रथा को रोकने में कानून की भी एक सीमा है क्योंकि इसे रोकने के लिए समाज की इच्छाशक्ति और प्रगतिशील सोच जरूरी है जो शिक्षा और सामाजिक जागरूकता से ही संभव है। वहेज जैसी बीमारी से हमारी बेटियों को बचाना है तो उन्हें शिक्षा दी जानी चाहिए और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर करना चाहिए ताकि दहेज जैसी चीज़ मजाक बन कर रह जाए। इसके लिए पूरे समाज एक साथ आगे आएगा तो इस कुप्रथा का वहन हो सकेगा।

● इन्दिरा, सहायक प्रबंधक

स्वस्थ तन के लिए स्वस्थ मन जरूरी



बहुत से लोग स्वस्थ व तंदुरुस्त रहने के महत्व को कम आंकते हैं. जबकि अच्छी सेहत से बड़ा कोई धन नहीं है.

स्वस्थ और तंदुरुस्त रहना हमारे दैनिक कार्यों को पूरा करने में मदद करता है. स्वस्थ रहने का अर्थ रोग रहित तन का होना ही नहीं, बल्कि तनावमुक्त मन का होना भी है. यदि एक व्यक्ति अस्वस्थ मन रखता है, तो वह अपने शरीर को स्वस्थ नहीं रख सकता है. शरीर और मन दोनों की स्वस्थता जीवन में सफलता के साथ आनंदमय जीवन जीने का सूत्र है. अच्छा मानसिक स्वास्थ्य हमें अच्छा महसूस कराने के साथ शारीरिक क्षमता और आत्मविश्वास प्रदान करता है. अच्छा शारीरिक स्वास्थ्य हमारी परेशानियों के समय में मदद करता है, वहीं बेकार या खराब शारीरिक स्वास्थ्य हमें अधिक कमजोर बनाता है और हमारे लिए बीमारियों का खतरा बढ़ाता है. हमें अपने शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखने के लिए सभी बिन्दुओं के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है. कुछ लोग बहुत अच्छे से जानते हैं कि शरीर को साफ-सुथरा और स्वस्थ कैसे रखा जाता है, लेकिन मन में घूम रही परेशानियों की वजह से उन्हें स्वस्थ रहने के लाभ नहीं मिल पाते हैं. मानसिक तनाव धीरे-धीरे शारीरिक स्वास्थ्य को कमजोर कर देता है. ऐसे में जरूरी है हम कि शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य को लेकर भी गंभीर रहें. इसके लिए आलस्य को त्यागकर ध्यान व व्यायाम दोनों का सहारा लिया जाना चाहिए.

हम सभी ने जीवन में कम से कम एक बार एक कहावत सुनी है, “स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग निवास करता है”. जिसका अर्थ है कि किसी का शारीरिक स्वास्थ्य उसके मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है. हालांकि कहावत की सत्यता को हममें से कोई भी नजरअंदाज नहीं कर सकता. भले ही हम कहावत पर विश्वास करते हैं, लेकिन सरकारी नौकरी की परीक्षा में खुद को तैयार करने के लिए हम अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना छोड़ देते हैं.

सरकारी नौकरी के इच्छुक उम्मीदवार आने वाले परीक्षाओं के लिए अध्ययन और अभ्यास में अपना सारा समय बिताते हैं.

इस निरंतर परिश्रम के बीच में वे इस तथ्य को पूरी तरह से अनदेखा करते हैं कि उनका स्वास्थ्य समान रूप से महत्वपूर्ण है. यदि आप स्वस्थ रहते हैं, तो आप जो सीख रहे हैं उसे याद रखने में बेहतर होगा और इसे लंबे समय तक बनाए रख सकते हैं. तो, यहां 5 महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सुझाव दिए गए हैं जो आपको सबसे अधिक विपुल तरीके से आपके स्वास्थ्य की देखभाल करने में मदद करेंगे.

1. समय पर खाना



आपके मस्तिष्क को कुशलता से काम करने के लिए भोजन से ऊर्जा की आवश्यकता होती है, तो इसलिए कभी भी खाना ना भूलें. चाहे आप आगामी परीक्षा का अध्ययन कर रहे हों या आप दिन में बिस्तर से उठ रहे हों लेकिन कभी भी अपना खाना ग्रहण करना न भूलें. संतुलित

भोजन आपके शरीर के रक्त शर्करा के स्तर को स्थिर रखता है और आपके शरीर की शक्ति को बनाये रखता है.

2. नींद



जब हम राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे होते हैं, तो हममें से अधिकांश को पूरी रात अध्ययन की आदत होती है. जबकि कुछ उम्मीदवार सुबह जल्दी उठ कर आद्यां करते हैं. कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका पसंदीदा अध्ययन समय क्या है, हमेशा हर दिन कम से कम 8 घंटे की नींद लेने की कोशिश करें. एक गुणवत्ता वाली नींद याददाश्त और

ध्यान केंद्रित करने की आपकी क्षमता में सुधार करती है। यदि आप ठीक से नहीं सोते हैं, तो आप जो भी पढ़ते हैं, उसमें से बहुत कुछ याद नहीं रह पाता है।

3. हाइड्रेटेड रहिए



निर्जलीकरण आपकी ऊर्जा को बहा सकता है और आप अपनी एकाग्रता भी खो सकता है। पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से न केवल आपको अधिक ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है बल्कि यह आपको ओवरईटिंग से भी बचाता है। इसलिए सुनिश्चित करें कि आप अपने जलयोजन स्तर को बनाए रखने के लिए हर दिन छह या आठ गिलास पानी पीते हैं।

4. व्यायाम

व्यायाम से रक्त बहाव बेहतर होता है जो हमारे मस्तिष्क में



अधिक ऑक्सीजन पहुंचाता है और हमारे मस्तिष्क को अधिक कुशलता से कार्य करने में मदद करता है। यह आपके मस्तिष्क को रीसेट करता है, मस्तिष्क में रक्त के प्रवाह को बढ़ाता है और हमें महत्वपूर्ण सोच और प्रतिधारण के लिए तैयार करता है। दैनिक रूप से 15 मिनट का व्यायाम भी आपके लिए बहुत है।

5. अस्वास्थ्यकर भोजन से बचें

जब तक आप जंक फूड से चिपके रहते हैं, तब तक नियमित भोजन खाने से कोई अच्छा उद्देश्य नहीं होगा। हालांकि थोड़ा फास्ट फूड अब और आगे आपको प्रभावित नहीं करेगा, लेकिन सुनिश्चित करें कि यह एक आदत न हों। आपको मस्तिष्क अवरुद्ध खाद्य पदार्थों से बचना चाहिए जैसे कि मैदा से बने खाद्य पदार्थ या जो परिष्कृत चीनी में उच्च हैं: कुकीज़, केक, और मफिन, चॉकलेट, डेसर्ट या कैंडीज।

● डॉ. अनुराग पी. राऊळ, उप प्रबंधक

पतरातू घाटी : एक सुंदर यात्रा



दीवाली की छुट्टियों में मुझे अपने परिवार के साथ राँची जाने का मौका मिला जो झारखंड राज्य की राजधानी है। राँची के

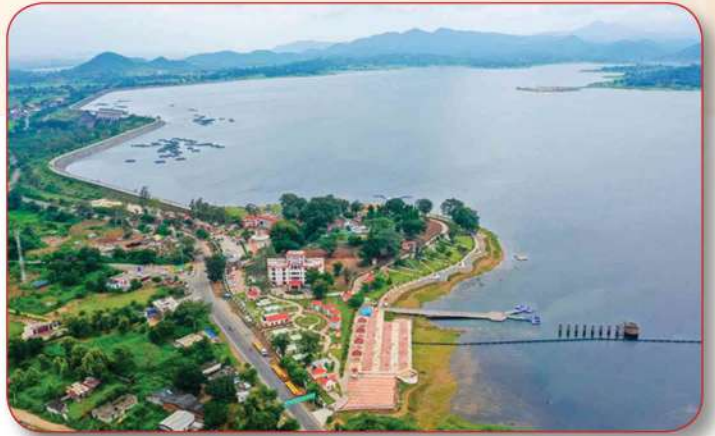
आस-पास घूमने- फिरने के लिए कई सारे जलप्रपात, नदियाँ, बांध और घाटियाँ हैं। पतरातू घाटी भी इनमें से एक है।

वक्त निकाल कर हम अपने परिवार के साथ पतरातू घाटी घूमने वक्त। पतरातू की घाटियाँ बिरसा मुंडा हवाई अड्डा राँची से 40 किलो मीटर की दूरी पर रामगढ़ रोड पर है। इस के रास्ते बहुत खूबसूरत हैं। निजी कार से तो आपको सफर करने में बहुत आनंद आएगा।

राँची से कुछ दूर निकलने पर ही आपको रास्ते के किनारे हरे - भरे पेड़ दिखाई देंगे, खूबसूरत पहाड़ियाँ दिखाई देंगी जो दिल को छू लेने वाली होती हैं। घाटियों के घुमावदार

रास्ते काफी मजेदार लगते हैं। जहाँ तक नज़र जाती है, सिर्फ हरियाली दिखाई देती है। पतरातू के लोगों का जीवन भी काफी सीधा-सादा है। यहाँ के लोगों का स्वास्थ्य काफी अच्छा रहता है क्योंकि यहाँ की हवा शुद्ध तथा पानी स्वच्छ होता है।

भव्य पतरातू घाटी अपने अनोखेपन और अद्वितीय सुंदरता के कारण विस्मय में छोड़ देती है। निस्संदेह, राँची के आसपास के सबसे मनोरम स्थानों में से एक, घाटी में घुमावदार सड़कें हैं जो पहाड़ियों से देखे जाने पर आँखों को सुकून पहुंचाती हैं। राँची से पतरातू तक की मनोरम यात्रा आनंददायक है क्योंकि राह में ऐसे ऐसे खूबसूरत प्राकृतिक दृश्य दिखते हैं जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। घाटी के शानदार दृश्यों का लुत्फ उठाने के लिए हम जलेबी घाट पर रुकें। पतरातू उन लोगों को खुशी दे सकता



इसके साथ ही पतरातू बांध भी है जो देखने में काफी खूबसूरत है। इसमें बोटिंग की भी सुविधा है जिसका आप अपने परिवार के साथ मज़ा ले सकते हैं। पतरातू बांध का निर्माण सबसे बड़े भारतीय इंजीनियर और भारतीय इंजीनियरिंग के जनक सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की योजना के तहत किया गया था। नलकनी नदी का पानी और इस बांध के आसपास की पहाड़ियों के झरने से इस बांध में जमा किया जाता है। इस बांध की कुल संग्रहण क्षमता 81 वर्ग मील है। यह एक सुंदर पर्यटन स्थल है और पूरे वर्ष के दौरान विशेष रूप से सर्दियों के मौसम के दौरान बड़ी संख्या में लोग पिकनिक के लिए यहाँ आते हैं। इस बांध को नलकर्णी बांध के रूप में भी जाना जाता है, जो अपनी खूबसूरत वादियों और पहाड़ों पर बने घुमावदार सर्पनुमा मार्ग के कारण मनोरम दृश्यों से मन को लुभाते हैं और बांध के 3 तरफ सीमाएं बनाते हैं।



है जो लंबी ड्राइव लेना पसंद करते हैं।

इन नज़ारों को देखकर ऐसा लगता है, भगवान ने घर हमें सही जगह दिया है, हर तरफ हरियाली है, जिसकी खूबसूरती दिलो-दिमाग पर छाई है।

ज़िंदगी आजकल व्यस्त हो गयी है, प्रकृति की खूबसूरती कहीं खो गयी है, यहाँ लौटता हूँ जब कभी भी, लगता है ज़िंदगी इतनी खूबसूरत है।

आप भी आ सकते हैं यहाँ, स्वागत रहेगा आपका हमारे राँची में, आपका दिल भी खुश हो जाएगा, आपके जीवन में भी खुशियों का एक पल और जुड़ जाएगा।

पतरातू जाने वाले पर्यटकों को सबसे अधिक कायाकल्प करने वाले अनुभवों में से एक पतरातू बांध के जलाशय में एक नाव की सवारी करना है जो शांतिपूर्ण और सुकूनदायी होती है। राँची से पतरातू जाने में आपको 1 घंटे का समय लगेगा लेकिन एक बार जाने के बाद वहाँ से वापस लौट आने का मन नहीं करेगा। वहाँ व्यतीत किया गया समय का अनुभव भी सुखदायी होगा।

पतरातू घाटी जाकर,
दिल तो यही करेगा,
की वक्त थम जाए,
और वक्त हमेशा के लिए यहीं रुक जाएं।

● अजीत बारला, वरिष्ठ प्रबंधक

केरल के जनजातीय नृत्य कला रूप



केरल के आदिम निवासी, "आदिवासी", अलग-थलग अस्तित्व में समुदायों के अद्वितीय उदाहरण हैं, जो अभी भी अपने जीवन और

रीति-रिवाजों को संरक्षित कर रहे हैं, जो शहरीकरण की बढ़ती लहरों से लगभग बेदाग हैं। उत्तरी केरल के वायनाड जिले में कई नृत्य रूप हैं, जिन्होंने इसकी मिट्टी में जड़ें जमा ली हैं। प्रकृति की लय के अनुरूप नृत्य शैलियाँ पारंपरिक जीवन की सूक्ष्मताओं को स्पष्ट अभिव्यक्ति करते हैं। कलात्मक रंग प्रत्येक समुदाय की विशिष्ट सामाजिक संरचनाओं को दर्शाते हैं जो इस क्षेत्र के पहाड़ी इलाकों के बीच जीवित रहते हैं। विभिन्न आकारों के ड्रम जैसे क्षेत्रीय और जंगली रूप से बने संगीत वाद्ययंत्र अक्सर भावनाओं की अधिकता व्यक्त करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। केरल के वायनाड जिले में आदिवासी समुदायों के जीवन में विभिन्न अवसरों को चिह्नित करने के लिए कई दिलचस्प नृत्य रूप और गीत हैं।

प्रकृति की नब्ज के साथ ताल रखते हुए और अपने पारंपरिक जीवन से अभिव्यक्ति के कारणों की पहचान करते हुए, केरल के आदिवासी लोगों ने कला रूपों की एक शृंखला को रूप और अर्थ दिया जो आकर्षक और प्रस्तुति में सरल हैं। ये कला रूप अक्सर अपनी स्पष्ट भावनाओं को व्यक्त करते हैं, जो जीवन में अनुभवों से पैदा होते हैं। कभी-कभी एक जनजाति द्वारा पालन किए जाने वाले मूल्यों, परंपराओं और जीवन शैली पर जोर देने के लिए प्रदर्शन किया जाता है। केरल में आदिवासी समुदाय की कलात्मक अभिव्यक्तियाँ उनकी विशिष्ट, एकांत और प्राचीन सामाजिक संरचना को दर्शाती हैं। ये आदिवासी कला रूप अभी भी केरल के वनाच्छादित पहाड़ी इलाकों के आदिवासी बस्तियों में जीवित हैं। आदिवासी लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले कुछ संगीत वाद्ययंत्र अलग-अलग आकार और स्वर के व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले ड्रम अद्वितीय हैं। इनमें से प्रत्येक समुदाय की अपनी अलग-अलग नृत्य परंपरा है। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

1. गढ़िका :

वायनाड जिले में अदियान आदिवासी समुदाय द्वारा प्रदर्शित, गढ़िका की उत्पत्ति का श्रेय केरल के वायनाड के पास मैसूर (कर्नाटक) से देवी मरियम्मन के पास के राज्य में आगमन को जाता है। इस अनुष्ठान कला रूप की पूरी प्रस्तुति एक नृत्य-नाटक की तरह है, जिसमें संगीतकारों की एक टीम शामिल होती है जो वायु वाद्ययंत्र बजाती है और ताल बजाती है। कलाकार एक जले हुए दीपक के चारों ओर नृत्य करते हैं और नृत्य के दौरान प्रमुख कलाकार संगीतकारों के साथ बातचीत करते हैं, उनके साथ बहस करते हैं, समाधान खोजने की कोशिश करते हैं और अंत में देवी को खुश करने की पूरी कोशिश करते हैं। गढ़िका मुख्य रूप से देवी या मरियम्मन को प्रसन्न करके आदिवासी समुदाय के सदस्यों को प्रभावित करने वाली गंभीर बीमारियों को दूर करने के लिए की जाती है। यह एक प्रकार का नृत्य है और गढ़िका के दो रूप हैं जिन्हें नट्टु गढ़िका और पूजा गढ़िका कहा जाता है। नट्टु गढ़िका का सार्वजनिक रूप से मंचन किया जाता है, जबकि पूजा गढ़िका को अनुष्ठानिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है, मुख्य रूप से बीमारी को ठीक करने के लिए। इस कला रूप का स्वरूप एक नृत्य-नाटक जैसा है और इसके साथ वाद्य यंत्र और ढोल बजाने वाले संगीतकार भी होंगे। इस नृत्य नाटक के कलाकार संगीत के अनुसार लयबद्ध रूप से चलते हैं और मलयालम के साथ-साथ कन्नड़ और तुलु भाषाओं का मिश्रण रूप बोला जाता है।

गढ़िका अक्सर मलयालम माह मिथुनम में किया जाता है जो जून-जुलाई में पड़ता है। कला के प्रतिभागी, उन घरों में जाते हैं, जहां से उन्हें प्रदर्शन करने और फिर अनुष्ठान करने का निमंत्रण मिला है। इस जनजाति का मानना है कि देवताओं के क्रोधित होने पर कोई बीमार पड़ जाता है और देवताओं को प्रसन्न करने और इस तरह बीमारी को ठीक करने के लिए गढ़िका की जाती है। प्रमुख कलाकार मूपन, जनजाति का प्रमुख होगा और वह रोगी को ठीक करने में मदद करने के लिए भगवान शिव का आह्वान करता है। एक बार जब भगवान शिव को पृथ्वी पर लाया गया और उनके आह्वान से प्रसन्न होकर, चामुंडी, मनियम्मा, मालमकली और करीमकली सहित अन्य देवताओं का आगमन हुआ। प्रतिभागियों को साधारण, लेकिन रंगीन वेशभूषा में तैयार किया जाता है और उनमें पुरुष

ही महिलाओं की भूमिका करते हैं. ऐसे कलाकारों का मुख्य कार्य भगवान शिव के आह्वान में आने वाले देवी-देवताओं का स्वागत करना है.

2. मेधुवा कली :



मेधुवा कली आदिवासी कला है जो समुदाय में किसी भी विवाह समारोह का हिस्सा है. इसमें पुरुष और महिलाएँ दोनों भूमिका निभाते हैं.

यह ड्रम जैसे स्थानीय ताल नृत्य के साथ होते हैं और कलाकार संगीत वाद्ययंत्रों के साथ लयबद्ध रूप से छोटे घेरे में चलते हैं. मेधुवा अनुष्ठान नृत्य और संगीत के माध्यम से विवाह समारोहों के हिस्से के रूप में की जाने वाली एक ऐसी अभिव्यक्ति है. वायनाड के नायिक्कन जनजाति के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत, मेधुवा नृत्य में पुरुष और महिलाएं शामिल हैं, जो सरल चरणों के साथ नृत्य करते हैं, ताली बजाते हैं, एक गोलाकार पैटर्न बनाए रखते हैं. इस नृत्य के साथ आने वाले वाद्ययंत्रों में एक छोटे आकार का पवन वाद्य यंत्र और ताल प्रदान करने के लिए एक टक्कर शामिल है. एक गोलाकार पैटर्न में चलते हुए पुरुष और महिलाएं हाथों को पकड़ते हैं और अगल-बगल से झूलते हैं. नृत्य के साथ-साथ एक छोटा वायु वाद्य यंत्र और ताल बजाया जाता है.

3. काम्ब्रा नृथम



काम्ब्रा नृथम उत्तरी केरल के वायनाड के पहाड़ी जिले से संबंधित है, जहाँ पुरुष धान के मौसम के दौरान पारंपरिक नृत्य करते हैं. चटक लाल रंग के कपड़े पहने, पुरुष

चावल के खेत की मिट्टी की सीमाओं पर पंक्ति बनाते हैं और नृत्य और गायन शुरू करते हैं, जबकि महिलाएं खेत में नए चावल के पौधे लगाती रहती हैं. काम्ब्रा नृथम नामक आदिवासी

नृत्य धान के खेत की गतिविधियों से जुड़ा है.

4. पनियार कली



पनियार काली पनियार जनजाति के पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है. नृत्य प्रदर्शन में कारू, पारा (रॉक) और उडुक्कु (एक प्रकार

का डमरू) जैसे आदिम ताल वाद्य यंत्रों का उपयोग किया जाता है और नर्तक, लगभग 8 से 10 की संख्या में, अपने हाथों को एक साथ पकड़ कर एक घेरे में खड़े होते हैं. वे लयबद्ध रूप से घूमते हैं और ताल वाद्य यंत्रों की ताल पर लय में नृत्य करते हैं. जैसे-जैसे वे चलते हैं, सर्कल का विस्तार होता है. नृत्य तेजी से गति पकड़ता है, और कलाकार नृत्य के दौरान उच्च स्वर में अजीबोगरीब तरीके से रोते हैं.

5. मुदियाट्टम



मुदियाट्टम एक आदिवासी नृत्य है जो केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है. प्रदर्शन के साथ कारू, मरम, पारा और कोक्कारो जैसे वाद्य यंत्रों और

लकड़ी के छोटे-छोटे बक्सों पर खड़े प्रतिभागियों के सिर की सरल सुंदर हरकतें इस नृत्य शैली की विशेषता हैं. शुरुआत में प्रतिभागी अपने सिर को बहुत धीमी गति से हिलाते हैं जो बाद में तेज ग्रेसफुल मूवमेंट में परिणत होता है. प्रतिभागियों के बाल खुले होंगे और वे प्रदर्शन के दौरान बालों को नीचे की ओर बहने देंगे और लयबद्ध तरंगों में झूलेंगे. पृष्ठभूमि गाने के अनुसार प्रतिभागी तालबद्ध रूप से आगे बढ़ते हैं, जो ताल की आकर्षक धुनों के साथ होता है. मुदियाट्टम को सिर की सुंदर गति और अद्भुत जीवन शक्ति की विशेषता के कारण जाना जाता है.

● अंजना एस., उप प्रबंधक

पर्यावरण संरक्षण और अपशिष्ट प्रबंधन



पर्यावरण संरक्षण आम तौर पर पेड़ों और हरियाली के संरक्षण को दर्शाता है, लेकिन व्यापक अर्थों में इसका तात्पर्य पेड़ों, पौधों, पशुओं, पक्षियों और पूरे ग्रह की सुरक्षा से है। वास्तव में पर्यावरण और जीवन के बीच एक अनूठा संबंध है। पर्यावरण संरक्षण मानव जाति के भविष्य और अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है।

कितनी मनोरम है ये धरती, प्रकृति और ये पर्यावरण,
झल-झल ये बहते झरने, और इंद्रधनुषी नजारें,
ये प्रकृति ही जीवन है; अपने जीवन को बचाएँ,
संरक्षित कर इसको हम अपना भविष्य बचाएँ . . .

मुंबई में वायु गुणवत्ता सूचकांक 155 से 161 के बीच है जो "मध्यम", दर्जे की श्रेणी में आता है। आज पर्यावरणीय गिरावट और जलवायु परिवर्तन ने संपूर्ण मानव जाति को प्रभावित किया है। इस समस्या को दूर करने के लिए पूरी दुनिया को एक होना चाहिए, लेकिन गरीब देशों को पर्यावरणीय चिंताओं से निपटने के लिए विकसित देशों से मदद की आवश्यकता है।

मुंबई शहरीकरण की दौड़ में अब भी काफ़ी पीछे है, खासकर मेट्रो ट्रेन के मामले में। मेट्रो ट्रेन शेड के विस्तार के लिए आरे कॉलोनी, मुंबई में 5,000 से ज्यादा पेड़ काटे जा चुके हैं। स्थानीय लोगों ने इसका कड़ा विरोध किया और मुंबई हाइकोर्ट ने भी इसका समर्थन करते हुए पेड़ों की कटाई को बंद करने का आदेश दिया। एक अख़बार में मैंने देखा कि एक सामाजिक कार्यकर्ता जो इसका विरोध कर रहा था, पेड़ कटने के बाद उदास होकर कटे पेड़ के उपर ही रोते रोते सो गया। इस तस्वीर को देखकर मेरा दिल भी पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हो गया। एक बार मैं अपने एक दोस्त से मिलने उसके एचपीसीएल, चेंबूर के आवास पहुँचा। उसका घर सातवें मंज़िल पर था। उसके घर पर हर कमरे में एयर कंडीशनर लगा हुआ था। उसने बतलाया कि गर्मी की वजह से बिना एयर

कंडीशनर के रहना मुश्किल है। इसका कारण चेंबूर में बहुत सारे औद्योगिक और शोधन कंपनियाँ हैं। मेरा घर पवई, मुंबई में है, जहाँ मेरे घर में एयर कंडीशनर नहीं लगे होने के बावजूद भी मेरा परिवार आराम से रहता है क्योंकि यहाँ पवई लेक पास में है और इस क्षेत्र में पेड़ों की संख्या बहुत ज्यादा है।



वैश्विक स्तर पर 2015 में पेरिस जलवायु सम्मेलन में 195 देशों ने पहली बार सार्वभौमिक, कानूनी रूप से बाध्यकारी वैश्विक जलवायु समझौते को अपनाया। यह समझौता वैश्विक जलवायु परिवर्तन से बचने के लिए विश्वव्यापी कार्ययोजना को 2° C से नीचे और इसे 1.5° C तक सीमित करने के प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए एक वैश्विक कार्य-योजना बनाता है। पेरिस समझौता सदी के अंत से पहले आज की नीतियों और जलवायु-तटस्थता के बीच एक पुल है। इसमें अन्य देशों से स्वेच्छा से इसका समर्थन प्रदान करने या जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

ब्राज़ील में अमेज़ॉन जंगल का जलना अगस्त 2019 में अपने चरम पर था। अमेज़ॉन दुनिया का सबसे बड़ा वर्षावन है और एक महत्वपूर्ण कार्बन स्टोर है जो ग्लोबल वार्मिंग की गति को धीमा कर देता है। ब्राज़ील में आग की बढ़ती दर के लिए अंतरराष्ट्रीय नेताओं ने मुख्य रूप से ब्राज़ील के राष्ट्रपति जायर बोलोनारो की व्यापार समर्थक नीतियों को जिम्मेदार ठहराया है जिन्होंने पर्यावरण संरक्षण को कमजोर किया है।

भारत में जलवायु परिवर्तन का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। औसत वैश्विक तापमान में वृद्धि ने लंबे समय तक बारिश नहीं होने की चिंताजनक प्रवृत्ति को जन्म दिया है और अचानक अत्यधिक बारिश से घर और कृषि पैदावार नष्ट होती है और साथ ही साथ राजस्व में भारी नुकसान होता है। बाढ़ की घटनाओं में बड़े पैमाने पर भूस्खलन और कृषि क्षेत्र के नुकसान के कारण खाद्य सुरक्षा प्रभावित होगी।



भारत में बाढ़ की स्थिति भी काफी चिंताजनक है। बारिश के दिनों की संख्या कम हो रही है। नेचर कम्युनिकेशंस जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन से पता चला है कि मध्य भारत में 1950 से 2015 की अवधि में व्यापक बारिश की घटनाओं में तीन गुना वृद्धि हुई है। यह जलवायु परिवर्तन की ओर संकेत करता है। मानसून परिसंचरण के सामान्य कमजोर होने के बावजूद वर्षा होना, बारिश वाले स्थानों पर अचानक सुखे की स्थिति पैदा होना, किसी स्थान पर अचानक बाढ़ के हालात पैदा होना एक पूरे क्षेत्र की जलवायु परिस्थितियों में हो रहे बदलावों का सूचक है।

मानव अस्तित्व प्रकृति पर ही निर्भर है। आयुर्वेद, प्राचीन भारत से चिकित्सा की एक प्रथा जो पूरी तरह से प्राकृतिक जड़ी बूटियों पर निर्भर है, पौधों की विभिन्न प्रजातियों की कमी के कारण संकटों का सामना कर रही है। मनुष्यों द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र में अनावश्यक रुकावट के कारण विभिन्न जानवरों और पौधों की प्रजातियां विलुप्त हो गई हैं या विलुप्त होने के कगार पर हैं। ओजोन परत जो हमारे वातावरण में प्रवेश करने के लिए सूरज से पराबैंगनी किरणों को रोकती है, पर्यावरण में प्रदूषण पैदा करने वाली हानिकारक गैसों में वृद्धि के कारण नष्ट हो रही है। बढ़ती मानव आबादी की बढ़ती मांगों के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है। तब से लेकर अब तक, मनुष्य विकास के नाम पर पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है। ओजोन क्षय और ग्रीनहाउस प्रभाव के संचयी प्रभाव के कारण पृथ्वी पर तापमान लगातार बढ़ रहा है जिसके परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग हो रही है। यह सब ध्रुवों पर ग्लेशियर पिघलने के कारक बन रहे हैं और समुद्र के स्तर में वृद्धि में हो रही है।

हमारा देश अभी भी कृषि प्रधान देश है, पर अब बहुत से किसान या तो खेती छोड़ना चाह रहे हैं या मजबूरी में शहरों की ओर काम के लिए पलायन कर रहे हैं। 18 राज्यों में 5, फार्म हाउसों के सर्वेक्षण में कहा गया है कि 76 फीसदी किसान खेती के अलावा कुछ और काम करना पसंद करेंगे।

इनमें से 60 फीसदी किसान बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के कारण शहरों में नौकरी करना पसंद करेंगे। किसान उत्तरदाताओं के प्रतिशत ने कहा कि बेमौसम बारिश, सूखा, बाढ़ और कीट के हमले के कारण उनकी फसलें नष्ट हो गईं। ऐसे में आवश्यकता है कि भारत को खाद्य संकट से उबारने के लिए किसान वर्ग तथा उनकी चिंताओं पर ध्यान दिया जाए। किसान ही हमारे खेतों और पेड़ पौधों का ख्याल रखते हैं अगर हम सब उनका ख्याल नहीं रखेंगे तो उनका ख्याल कौन रखेगा?

पर्यावरण को सुरक्षित करने का सबसे कारगर उपाय अपशिष्ट प्रबंधन है जिसका अर्थ है - कचरे को संभालने से लेकर उसे निपटान के लिए अपने अंतिम गंतव्य तक ले जाने तक की सभी गतिविधियों का प्रबंधन। मानव और पर्यावरण के स्वस्थ कामकाज के लिए अपशिष्ट प्रबंधन आवश्यक है। हम कचरे के निपटान की तुलना में तेज गति से कचरे का उत्पादन कर रहे हैं। कई प्रकार के अपशिष्ट उत्पन्न होते हैं जैसे ठोस, गैसीय और तरल। निर्मित कचरे के सभी प्रकार अपशिष्ट प्रबंधन की विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरते हैं। कुशल अपशिष्ट प्रबंधन हमें सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण की ओर ले जाएगा।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, दुनिया के महासागरों में प्लास्टिक कचरा पाया जाता है जो समुद्री स्तनधारियों की आंतों में जाकर उनके जीवन को खतरे में डालता है। हमारे पर्यावरण में बड़ी मात्रा में माइक्रो प्लास्टिक पाया जाता है जिसके अपघटन होने में हजारों लाखों वर्ष लग जाते हैं। भारत में प्लास्टिक कचरे के प्रबंधन के लिए एक संगठित प्रणाली का अभाव है, जिससे कारण व्यापक स्तर पर कूड़े-कचरे का फैलता है।

अक्टूबर 2017, के सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट ने मेलुहा इकोटेल, हीरानंदानी पवई में 'खाद और अलगाव कार्यशाला' आयोजित की गयी थी। इसके बाद हमारे सोसाइटी हीरानंदानी पवई में वेस्ट मैनेजमेंट को सही तरीके से अपनाया गया है और यह मुंबई के लोगों के लिए एक मिशाल बन गयी है। अब धीरे-धीरे आस-पास के सोसाइटी के लोग भी इसे अपना रहे हैं।

निष्कर्ष-

ऐसे कई छोटी-छोटी चीजें हैं जिन्हें आप पर्यावरण पर असर को कम करने के लिए उपयोग कर सकते हैं:- अधिक से अधिक पेड़ लगाएं; वाहनों की नियमित देखभाल करें; अक्षय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करें; बिजली के उपयोग को कम करें; पानी की खपत कम करें; स्वस्थ आदतों को अपनाएँ; कम उपभोग करें, दोहराएं, फिर से उपयोग करें; वन्यजीव और वर्षावन की रक्षा करें; रेड मीट ना खाएं; कार्बनिक भोजन को अपनाएं; पैक किए गए भोजन से बचें; वन क्षेत्रों को बचाएं;

जीवन में सादगी को ग्रहण करें. समस्या ये है कि व्यक्ति सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं. हालाँकि, ये सभी प्रयास तब तक व्यर्थ चले जाएंगे जब तक कि लोग पर्यावरण को बचाने की अपनी ज़िम्मेदारी नहीं समझते. हम सभी को, अपने पर्यावरण को बचाकर, अपने ग्रह को बचाने के लिए व्यक्तिगत रूप से एक साथ आना होगा. अगर हम पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 को देखें, तो इसमें पर्यावरण उल्लंघन करने पर बहुत सारे कड़े दंडों का प्रावधान है. ज़रूरत है तो बस इसके सही ढंग से कार्यान्वयन की.

हम सभी प्रकृति का एक हिस्सा हैं और यह हमारा कर्तव्य है कि हम प्रकृति को कचरे के खतरनाक प्रभावों से बचाएं. दीवाली खुशियाँ लेकर आती है. जब पटाखे फूटते हैं वातावरण पूरा धुएँ से भर जाता है. लोग जब एक दूसरे से मिलने जाते हैं तोहफे और मिठाइयों के डब्बे से अगले दिन गंदगी का ढेर लग जाता है. दीवाली ज़रूर मनाएँ, पर स्वच्छता का भी ख्याल रखें. वर्सोवा बीच कभी मुंबई का सबसे गंदा समुद्र तट था. यह निवासियों के लिए एक डंपिंग ग्राउंड था जिसे कूड़ेदान के साथ भी जोड़ा जाता था ताकि पर्यटक यहाँ ना यहाँ आयें. लेकिन अफरोज शाह के अथक प्रयास से वर्सोवा बीच को साफ करने में काफ़ी सहायता मिली. इसमें स्थानीय लोगों ने

भी अपना योगदान दिया. अफरोज शाह को उनके प्रयास के लिए 2016 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा "चैंपियंस ऑफ द मैन" के लिए नामित किया गया था. सरकार को जागरूकता अभियान और विज्ञापन शुरू करने चाहिए, ताकि लोगों को अतिरिक्त कचरे के दुष्प्रभावों के बारे में सूचित किया जा सके. कचरे के निपटान के लिए नई और उन्नत तकनीक का इस्तेमाल किया जाना चाहिए. प्लास्टिक के अधिकतम पुनः उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए.

आइए हम सब मिलकर यह प्रण लें:-

“ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाना है,

इस पर्यावरण को फिर जीने योग्य बनाना है

यह जागरूकता फैलाना है,

पर्यावरण को सुरक्षित बनाना है .

अपशिष्ट को हर दिन अलग-अलग करना है,

हर अपशिष्ट को सुनिश्चित कचरे के डब्बे तक पहुँचाना है,

प्लास्टिक की जगह जूट की थैली का उपयोग करना है,

अपने धरती को प्लास्टिक मुक्त बनाना है”.

● नरेंद्र बासा, उप प्रबंधक,

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव



आज कल हम एक शब्द को बहुत देख और सुन रहे हैं - "ग्लोबल वार्मिंग". इसके बारे में सभी विकसित और विकाशील देश चर्चा कर रहे हैं. क्या है ग्लोबल वार्मिंग ?

ग्लोबल वार्मिंग को सामान्य भाषा में, भूमंडलीय तापमान में वृद्धि कहा जाता है. वायुमंडल में ऑक्सीजन की मात्रा ज्यादा होनी चाहिए, परन्तु प्रदूषण के बढ़ने से वायुमंडल में आक्सीजन के साथ-साथ कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा भी बढ़ रही है.

जिसके कारण ओजोन परत में छिद्र हो चुके हैं. ओजोन परत, वह परत है जो पराबैंगनी किरणों को सीधे धरती पर आने से रोकती है. पराबैंगनी किरणों के सीधे पृथ्वी पर पहुँचने से इसका असर ग्रीनहाउस पर पड़ रहा है.

क्या है ग्रीनहाउस ?

वायुमंडल में सभी प्रकार की गैसों हैं जिनका अपना एक प्रतिशत होता है. यह उन गैसों से बना ऐसा आवरण जो कि पृथ्वी पर सुरक्षा परत की तरह काम करता है, जिसके असंतुलित होते ही ग्लोबल वार्मिंग जैसी भीषण समस्या सामने आती है. इसके प्रभाव से प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है, जिसके कारण कहीं पर अत्यधिक गर्मी है तो कहीं पर अत्यधिक बारिश और अंटार्कटिका में भी बर्फ तेजी से पिघल रही है और जल स्तर में बढ़ोतरी हो रही है. विशेषज्ञों के अनुसार आने वाले समय में शायद कुछ शहरों, जो समुद्र के किनारे स्थित हैं, का नाम हमें सुनने को ना मिले. ग्लोबल वार्मिंग के कारण ऋतुओं के चक्र में भी काफी बदलाव आ गया है.

पहले सभी ऋतुएँ अपने समय पर आती और जाती थी, अभी इनके समय में काफ़ी परिवर्तन आ गया है। अपने आप को इस स्थिति तक लाने वाले भी हम ही हैं। ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा कारण प्रदूषण है। आज प्रदूषण और उसके प्रकार बताना व्यर्थ है। हर जगह और हर क्षेत्र में यह बढ़ रहा है, जिससे कारण कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। ये सब ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ा रहे हैं और सभी देश अपने आप को आधुनिक और विकसित करने की होड़ में प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। इसके लिए पेड़ों की लगातार कटाई, पहाड़ों को काट कर रास्ते बनाना और नदियों को रोक कर बांध बनाना। गाँवों का शहरीकरण में बदलाव, हर खाली जगह पर बिल्डिंग, कारखाना या अन्य कमाई के स्रोत खोलना सामान्य हो गया है। खुली और ताजी हवा के लिये कोई स्रोत रहा नहीं है। सुविधानुसार प्राचीन नदियों के जल की दिशा बदल देना, जिससे उस नदी का प्रवाह कम होते-होते वह नदी स्वतः ही खत्म हो जाती है। गिनाने को तो बहुत सारे कारण हैं, परन्तु हम उन पर कितना ध्यान देते हैं।

पृथ्वी पर हर जीव-जंतु एक दूसरे से कहीं ना कहीं किसी ना किसी रूप में जुड़े रहते हैं। किसी एक स्तर में बदलाव आते ही पृथ्वी का पूरा चक्र प्रभावित होता है, जिसके कारण भारी नुकसान का सामना करना पड़ता है। पहले भू-जल पीने योग्य होता था। हमने उसे इतना दूषित कर दिया है कि हमें उसको शुद्ध करने के लिए आरओ प्लांट और फिल्टर का उपयोग करना पड़ रहा है। कुछ सालों में हमें सांस लेने के लिए ऑक्सीजन भी कृत्रिम रूप में बनानी पड़ेगी।



ग्लोबल वार्मिंग आपदा का प्रभाव बहुत धीरे-धीरे होता है, परन्तु इसकी भरपाई करना मानव समाज के लिए मुश्किल हो जाएगा। ग्लोबल वार्मिंग के चलते कई पशु-पक्षी व जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ ही विलुप्त हो चुकी हैं।

ध्रुवीय स्थान बारह महीनों बर्फ की चादर ढके रहते थे। अब

वहाँ बर्फ पिघलने लगी है, जिससे जल स्तर में वृद्धि होने लगी है। पृथ्वी पर मौसम के असंतुलन के कारण अब मौसम अपनी मर्जी से बदलता रहता है, जिसका सबसे ज्यादा असर फसलों पर पड़ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग से पर्यावरण के हर एक पक्ष पर प्रभाव पड़ेगा।



शुद्ध ऑक्सीजन न मिलने के कारण व्यक्ति घुटन की जिंदगी जीने लगा है। ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रण में लाने के लिए हमें “पर्यावरण बचाओ, पृथ्वी बचाओ” के लक्ष्य के साथ दैनिक जीवन में कुछ बदलाव करने होंगे। उदाहरण के लिए - लंबी यात्रा के लिये कार की बजाय ट्रेन का उपयोग करें, जहाँ तक संभव हो निजी वाहनों की बजाय सार्वजनिक यातायात के साधनों का उपयोग करें। अधिक से अधिक मात्रा में पेड़ लगाएँ और उनकी देखभाल करें, बिजली से चलने वाले साधनों की अपेक्षा सौर ऊर्जा वाले साधनों का उपयोग करें। जल का दुरुपयोग न करें, प्राचीन व प्राकृतिक जल संसाधनों का नवीनीकरण इस तरह न करें कि वे नष्ट हो जाएँ। आधुनिक चीजों के उपयोग को कम कर घरेलू व देशी चीजों का उपयोग करें। हमने देखा कि कोरोना के कारण सभी देशों में लॉकडाउन होने से प्रकृति पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिले। इस बारे में सभी देशों को साथ आ कर ध्यान देना होगा, अन्यथा हमें आने वाले समय में इसके भयानक नतीजे भुगतने पड़ सकते हैं।

● दिनेश चंद, उप प्रबंधक, नई दिल्ली

कविताएं

इस वर्षा ऋतु को सादर नमन के साथ...



मन का वसंत उजला, उजला,
धरती पर फैला है सोना,
हेमंत गया तब जान सके,
कितना सुंदर उसका होना.

अब ग्रीष्म की दोपहरी में,
पिघले दिन, पिघली हैं रातें,
जीवन के यह अलसाए पल,
पल-पल में ढल-ढल की बातें.

जब ऋतु वर्षा दे थाप मधुर,
भीगे वसुधा का थल आंचल,
मीठी सी गंध सुगंध उठे,
महके मन का पांखी चंचल.

जीवन इस मौसम सा है,
भाए भी और घबराए भी,
जब बूंद बूंद बादल घोले,
मिट्टी मन की महकाए भी.

जब तोड़े सारे छंद - बंध,
जलवेग प्रलय ला सकता है,
पर सौम्य रहे तो गगन-मगन,
धरती मनहर भा सकता है.

दो साथी



निर्जन समंदर तीर पर
दोनों साथी थमकर
जी रहे वो यादें
सहेज रखा बरसों जिन्हें.

एक-दूसरे से मिले
मित्रों से रहे डटे
दोनों सहचर आगे बढ़े
सहे वर्षा भी, तप भी.

हुए साथ-साथ बड़े
सुदृढ़ चट्टान सदृश
ललकार पर प्रतिकार
हर क्षण मजबूत.

प्रेम पथ की यात्रा
निष्ठा बनती है पाथेय
उदात्त प्रेम को बुनती
जीवन राग को गुनगुनाती.

स्मृति-गृह में अंकित कल
करता प्रबल आत्मबल
ऐसा नेह-बंधन साध्य
उच्चता ही जिसका लक्ष्य.

हिन्दी में काम करना आसान है, शुरु करके तो देखिए

1. हिन्दी में हस्ताक्षर करें.
2. हिन्दी पत्रों का उत्तर हिन्दी में दें.
3. हिन्दी में हस्ताक्षरित अंग्रेज़ी पत्रों के जवाब भी हिन्दी में दें.
4. विभाग के सभी कंप्यूटरों पर बहुभाषी शब्द संसाधक यूनिकोड लोड करें.
5. हिन्दी भाषी राज्यों को भेजे जाने वाले लिफाफों पर पते हिंदी में लिखें.
6. हिन्दी प्रतियोगिताओं में भाग लें.
7. छोटी छोटी टिप्पणियां हिन्दी में लिखने का प्रयास करें.
8. फाइलों पर विषय हिन्दी-अंग्रेज़ी में लिखें.
9. मुलाकाती कार्ड, रबड़ की मुहरें नाम पट्ट हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में बनवाएं.
10. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करें.

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित 1967) की धारा 3 (3) के अंतर्गत निम्नलिखित सभी दस्तावेज अनिवार्य रूप से द्विभाषी (हिंदी और अंग्रेजी) में जारी होने चाहिए -

1. साधारण आदेश (General Orders)
 2. संकल्प (Resolution)
 3. नियम (Rules)
 4. प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन (Administrative & other Reports)
 5. प्रेस विज्ञप्तियाँ (Press Release)
 6. संविदाएँ (Contracts)
 7. करार (Agreements)
 8. अनुज्ञप्तियाँ (Licences)
 9. निविदा प्ररूप (Tender Form)
 10. अनुज्ञा पत्र (Permits)
 12. निविदा सूचनाएँ (Tender Notices)
 13. अधिसूचनाएँ (Notificatons)
 14. संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन (Reports to be laid before the Parliament)
 14. राजकीय कागज पत्र (Official documents)
- उक्त पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि सभी दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में जारी किया जा रहा है.



31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष के लिए लेखापरीक्षित वित्तीय परिणाम

(करोड़ ₹. में)

अनु क्र.	विवरण	31.03.2023 को समाप्त वर्ष	31.03.2022 को समाप्त वर्ष
1	प्रीमियम आय (सकल)	36,591.59	43,208.46
2	कर पश्चात् निवल लाभ / (हानि)	6,312.50	2,005.74
3	प्रदत्त साम्य शेयर पूँजी	877.20	877.20
4	नेट वर्ध (प्रत्यक्ष मूल्य परिवर्तन खाते सहित)	61,700.11	55,657.73
5	कुल परिसंपत्तियां	1,57,124.60	1,44,887.37
6	सॉल्वेंसी अनुपात	2.61	1.96

टिप्पणी:

क) प्रीमियम आय अर्थात् सकल लिखित प्रीमियम, पुनर्बीमा का सकल और लागू करों का निवल है।

ख) ऊपर उल्लिखित विवरण सेबी (लिस्टिंग एवं अन्य डिसक्लोजर रिकॉयमेंट्स) विनियम, 2015 के विनियम 33 के अंतर्गत स्टॉक एक्सचेंज के साथ फाइल किए गए तिमाही तथा वर्ष के दौरान अब तक के वित्तीय परिणाम का विस्तृत प्रारूप का निष्कर्ष है। तिमाही तथा वर्ष के दौरान अब तक के वित्तीय परिणाम का विस्तृत प्रारूप स्टॉक एक्सचेंज की वेबसाइट्स (www.bseindia.com या www.nseindia.com) तथा निगम की वेबसाइट (www.gicre.in) पर उपलब्ध है।

मंडल निदेशकों के लिए और उनकी ओर से
हस्ताक्षर /-

देवेश श्रीवास्तव

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

डीआईएन: 08646006

स्थान: मुंबई

दिनांक : 25.05.2023